RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 नवम्बर 2020

बाल विज्ञान पत्रिका, नवम्बर 2020

चकमक

मूल्य ₹50

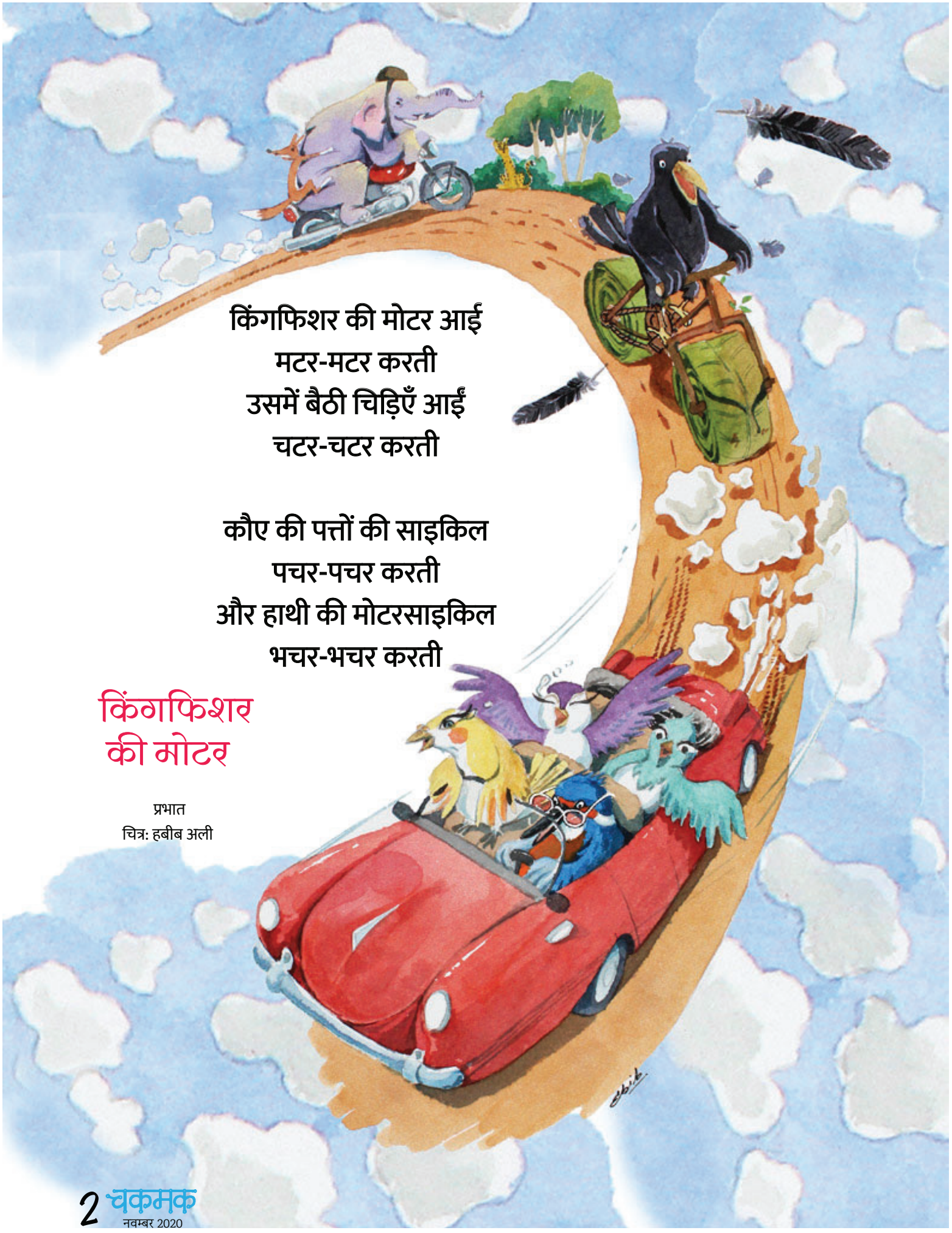

किंगफिशर की मोटर आई
मटर-मटर करती
उसमें बैठी चिड़िएँ आईं
चटर-चटर करती

कौए की पत्तों की साइकिल
पचर-पचर करती
और हाथी की मोटरसाइकिल
भचर-भचर करती

किंगफिशर की मोटर

प्रभात
चित्र: हबीब अली

अंक 410 ● नवम्बर 2020

चकमक

इस बार

किंगफिशर की मोटर – प्रभात– 2
हरा समन्दर गोपी चन्दर – वरुण ग्रोवर – 4
भूलभुलैया – 10
इक मक्खी थी – शादाब आलम – 11

लॉकडाउन और ... – इशिता देबनाथ बिस्वास – 12
शीलू की क्लास – राही डे रॉय – 16
क्यों-क्यों – 18
आसमान में शानदार आतिशबाज़ी – संकेत राऊत – 22
तुम भी जानो – मुदित श्रीवास्तव – 24

चमगादड़ों ...– नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन – 26
मेरा पन्ना – 28
माथापच्ची – 38
चित्रपहेली – 40
मेरा पहला-पहला क्रश – रोहन चक्रवर्ती – 43
लाल्टू की दो कविताएँ – 44

'बड़ों का बचपन'

कभी-कभी कुछ बड़ों की बातों से ऐसा लगता है जैसे कि वे खुद कभी बच्चे नहीं रहे होंगे। जब भी वे अपने बचपन की बातें करते हैं तो उनमें हमारे लिए कोई ना कोई सीख होती है, मसलन वे कितने अच्छे थे, कितने सुशील... शायद वे भूल गए हैं कि उनका बचपन वाकई में कैसा था। इसलिए हमने सोचा कि क्यों ना अलग-अलग लोगों से उनके बचपन के बारे में लिखने को कहा जाए - कोई आम या खास बात, कोई मज़ेदार या यादगार किस्सा, शैतानी या क्रश...।

ऐसी ही कुछ यादों को तुम 'बड़ों का बचपन' नाम के इस नए कॉलम में पढ़ सकते हो। इस अंक में तुम वरुण ग्रोवर (पेज 4) और रोहन चक्रवर्ती (पेज 43) के बचपन की यादों से रूबरू होगे। उम्मीद है कि तुम्हें इन्हें पढ़कर मज़ा आएगा।

आवरण चित्र: शिवांगी सिंह

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर
कनक शशि

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

डिज़ाइन
कनक शशि

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

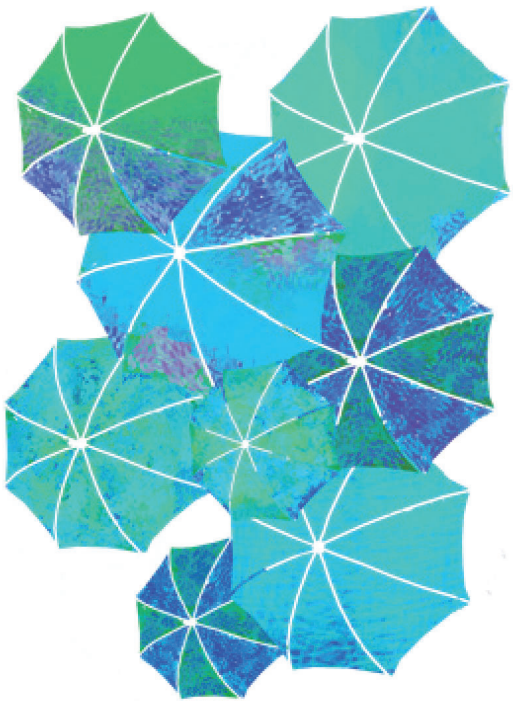

वरुण ग्रोवर
चित्र: कनक शशि

हरा समन्दर गोपी चन्दर

मैंने कभी समुद्र नहीं देखा था। और मेरे पास अपनी अलग से कोई छतरी भी नहीं रही थी। इसलिए जब मुझे अपने जीवन की पहली छतरी मिली, वो भी समुद्री हरे रंग की, तो ये बहुत बड़ी बात थी।

छतरी कोई बहुत महँगी चीज़ नहीं होती लेकिन उन दिनों हमारे लिए महँगी ही थी। मैं तब 9 साल का था और देहरादून में 'केन्द्रीय विद्यालय, इंडियन मिलिट्री एकेडमी' में पढ़ता था। स्कूल घर से बहुत दूर था। मैं पहले घर से आधे किलोमीटर दूर वाले बस स्टॉप पर जाता, जहाँ मिलिट्री का ट्रक (जिसका नाम 'शक्तिमान' था) आकर रुकता। उस ट्रक में चढ़ने को ठीक सीढ़ी भी नहीं होती – थोड़ा लटककर ऊपर चढ़ते। फिर हमारे सिपाही साब हमको अन्दर खींच लेते। हम बच्चों को इस करतब या कसरत, जो भी कह लो, में बड़ा मज़ा आता।

हालाँकि एक-डेढ़ साल बाद उसी ट्रक को एक सुन्दर बसनुमा आकार दे दिया गया। और उसमें सीढ़ी भी लग गई और अन्दर बैठने को कुर्सियाँ भी। उससे पहले अन्दर मिलिट्री-टाइप बैंच ही लगी थीं ट्रक की दीवारों से सटकर और बीच में खाली जगह थी जिसमें हम भीड़ लगाकर खड़े रहते।

खैर बात हो रही थी छतरी की – तो 1989 में देहरादून में अच्छी-खासी बरसात होती थी। अब तो ग्लोबल वार्मिंग ने सब जगह के मौसम हिला दिए हैं। लेकिन उस वक्त तक सबको पता होता था कि कौन-सी तारीख को बरसात शुरू होगी (जुलाई के आखिरी हफ्ते में), कब रज़ाइयाँ निकलेंगी (दीवाली के ठीक अगले दिन), कब सर्दी कम होना शुरू होगी (मकर संक्रान्ति के अगले हफ्ते) वगैरह। तो जुलाई में अभी स्कूल खुले ही थे कि बरसात का अन्देशा होने लगा।

पिछले साल तक मेरे पास रेनकोट था जो अब छोटा पड़ गया था। इसलिए मुझे जीवन में पहली बार एक छतरी दी गई थी। मुझे इतनी समझ तो नहीं थी कि माता-पिता की आर्थिक स्थिति क्या है लेकिन मैं इतना ज़रूर भाँप गया था कि ये महँगी चीज़ है और हमारे घर में ऐसी चीज़ें कम ही दिखती हैं।

और सुन्दर भी थी वो छतरी बहुत। ऐसा हरा रंग मैंने पहले नहीं देखा था। मन करता था कि बरसात में ही भीग लो, इसे खोलकर गन्दा ना करो। मैं जब पहले दिन उसको स्कूल लेकर गया तो थोड़ा-सा इतराया भी और थोड़ा घबराया भी कि कहीं कोई चुरा ना ले।

वापसी में भी 'शक्तिमान' ट्रक हमें बस स्टॉप पर उतारकर जाता। वहाँ से हम पाँच-छह बच्चे अपने-अपने घरों को पैदल जाते। छतरी का मेरे साथ तीसरा ही दिन था जब बस स्टॉप से घर की तरफ कूच करते हुए मुझे अचानक एहसास हुआ कि कुछ तो कमी है। हाथ से बैग और जेबों को टटोला तो दिल धक-सा रह गया – छतरी, जिसे मेरे हाथ में या फिर बैग में होना था, नहीं थी।

कहाँ गई? क्या ट्रक में गिर गई? या स्कूल में रह गई? या आज लेकर ही नहीं गया था? नहीं लेकर तो गया था – दिन में एक दोस्त ने बताया था कि इस हरे रंग को समुद्री हरा कहते हैं। मेरे लिए ये नई बात थी। तब तक के मेरे 9 साल के जीवन में मैंने बस हिमाचल प्रदेश और देहरादून ही देखे थे – दोनों हिमालय की गोद में। और समुद्र कैसा होता है ये मेरी कल्पना से भी परे की चीज़ थी। (हालाँकि मुझे बहुत बाद में पता चला कि जहाँ आज हिमालय है वहाँ लाखों साल पहले समुद्र ही था।)

लेकिन मेरे पास एक छतरी थी जिसका रंग समुद्र जैसा हरा था। और ये मेरे लिए अचरज और खुशी की बात थी।

लेकिन अब वो समुद्री हरी छतरी इस समुद्र जैसी बड़ी दुनिया में कहीं खो गई थी। मैंने उसे खो दिया था। अब उसे कैसे खोजूँ? और घर पर क्या कहूँगा? इन्हीं सारी उलझनों के बीच घर वाली गली में मेरे कदम ऐसे आगे बढ़ रहे थे जैसे दोनों पैरों में दस-दस किलो के बाट बँधे हों।

एक दुर्लभ चीज़, ऊपर से महँगी, तूपर से सिर्फ तीन दिन पुरानी – मेरे हाथों से कहीं फिसल गई थी। और मेरे अन्दर तरह-तरह के डर हिचकोले खा रहे थे। घर आते-आते मैंने दिमाग में एक माफीनामा जैसा तैयार किया कि मम्मी के सामने बस रो दूँगा और सब सच बता दूँगा।

लेकिन घर के अन्दर जाते ही मेरे काँपते होंठों से कुछ और ही निकला। "मेरी छतरी छीन ली!", मैंने कहा। मम्मी ने मुझे थोड़ा हैरान होकर देखा। मैंने फिर कहा, "छतरी छीन ली स्कूल में।"

"किसने छीन ली?", मम्मी ने पूछा।

"था कोई बच्चा। बड़ी क्लास का। इंटर्वल में आया और छतरी छीनकर ले गया।" मैंने उदास शक्ल बनाकर कहा। (वैसे उदास तो मैं सच में था ही।)

और सुन्दर भी थी वो छतरी बहुत। ऐसा हरा रंग मैंने पहले नहीं देखा था। मन करता था कि बरसात में ही भीग लो, इसे खोलकर गन्दा ना करो। मैं जब पहले दिन उसको स्कूल लेकर गया तो थोड़ा-सा इतराया भी और थोड़ा घबराया भी कि कहीं कोई चुरा ना ले।

मम्मी ने थोड़ा और कुरेदकर पूछा लेकिन मैं अपनी बात पर डटा रहा। मेरे बयान के मुताबिक वो छतरी इतनी अच्छी थी कि एक बड़ा बच्चा आया और मुझसे माँगने लगा। मैंने मना किया तो उसने मुझे धक्का दिया और छतरी छीनकर ले गया। मैंने किसी टीचर से उसकी शिकायत नहीं लगाई क्योंकि उसने मुझे धमकी दी थी कि अगर मैंने किसी को कहा तो वो आकर मुझे मारेगा।

अब सोचने पर फिल्मों का काफी असर दिख रहा है मेरी उस समय की सोच पर। लेकिन शायद मैंने इस मसालेदार कहानी का बखान पूरे जज़्बे से किया होगा कि मम्मी मेरी बात मान गईं।

मुझे लगा चलो बात खतम हुई। अब कल जाकर छतरी खोजूँगा और अगर मिल गई तो इसी कहानी का अगला हिस्सा जोड़ दूँगा कि वो लड़का वापस दे गया। 'शक्तिमान' ट्रक में इतनी भीड़ रहती थी कि मुझे उम्मीद थी कि उसी में कहीं गिर गई होगी। लेकिन सिपाही भैया ऐसी चीज़ें सँभालकर रखते हैं – उन्हें मिलेगी तो लौटा ही देंगे। हालाँकि छतरी खोने का दुख और अपनी लापरवाही पर गुस्सा अभी भी था – लेकिन गलती पकड़े जाने की शर्म और उसके बाद मिलने वाली सज़ा (जो शायद ना ही मिलती क्योंकि हमारे घर में पीटने का ऐसा कोई रिवाज़ नहीं था) से तो फिलहाल बच गया था।

लेकिन पता नहीं शाम को मम्मी-पापा के बीच क्या बातचीत हुई कि अगले दिन मुझे पता चला कि मम्मी मेरे साथ स्कूल जा रही हैं। उनका कहना था कि ये बहुत ही गलत है कि कोई भी बड़ा बच्चा आकर तीसरी क्लास के छोटे बच्चे का सामान छीन ले और उसे धमकियाँ दे। अब वो मेरे साथ स्कूल जाकर प्रिंसिपल से इस घटना की शिकायत करने वाली थीं।

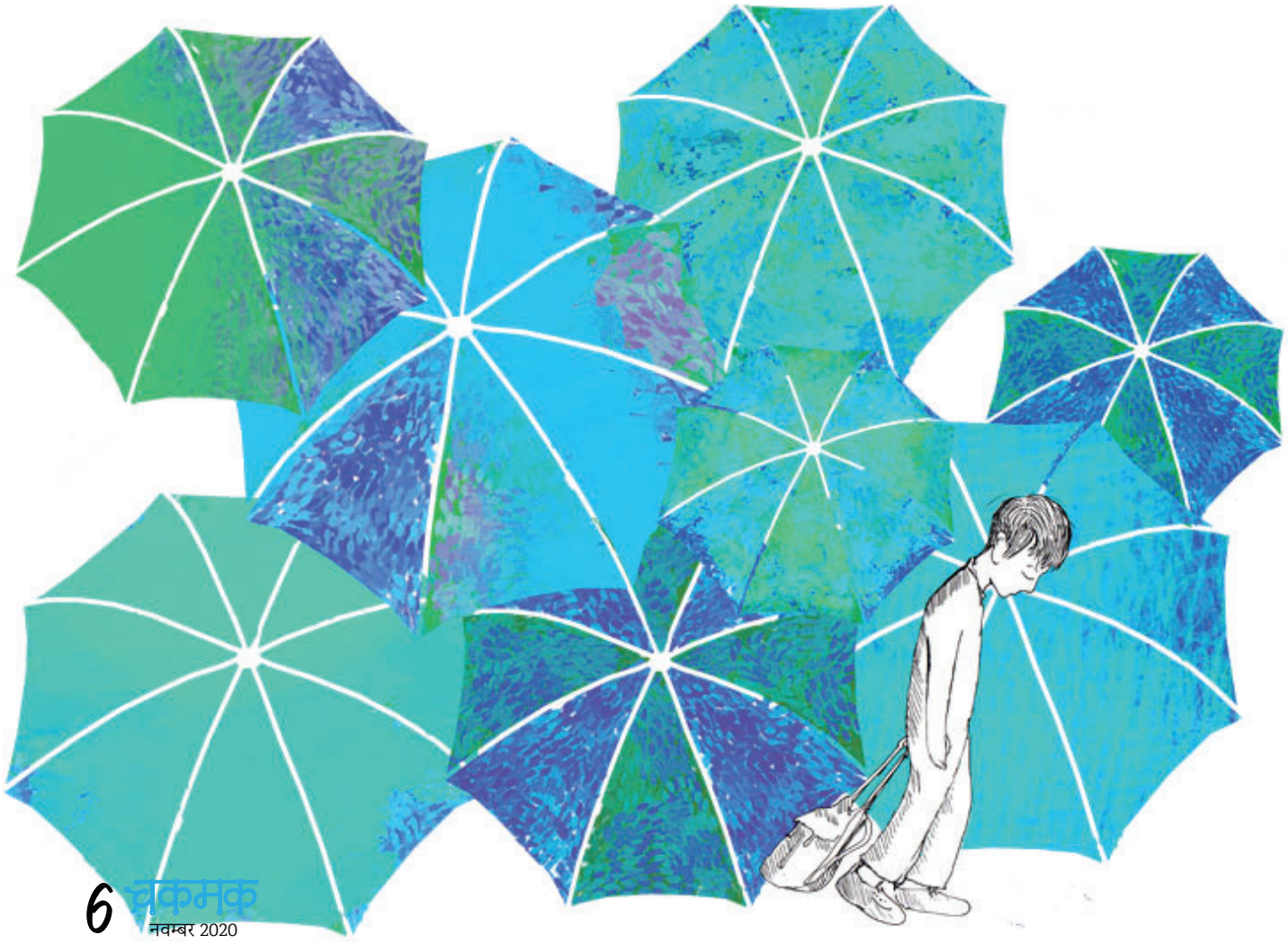

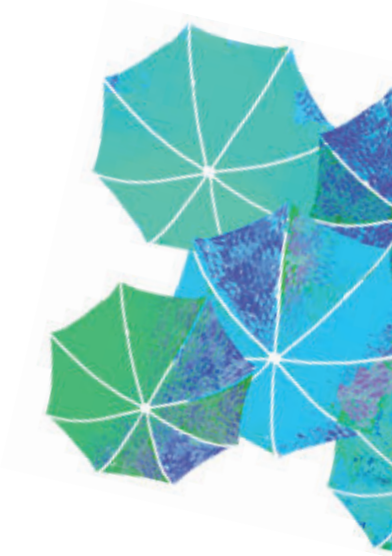

उस दिन हम 'शक्तिमान' की जगह 'विक्रम' (यानी कि देहरादून में चलने वाले तिपहिया टेम्पो) में स्कूल गए। प्रार्थना सभा के बाद मम्मी मुझे लेकर प्रिंसिपल के कमरे में गईं और पूरी घटना फिर से दोहराई। प्रिंसिपल ने मुझसे पूछा कि मुझे उस बच्चे का नाम या क्लास मालूम है, तो मैंने कहा कि मुझे कुछ भी नहीं मालूम।

मुझे फिर भी उम्मीद थी कि बात यहीं खतम हो जाएगी। प्रिंसिपल सर आश्वासन देंगे कि ऐसा नहीं होगा या मैं ही रो पड़ूँगा कि मैंने झूठ बोला था। लेकिन ना मैं रोया, ना प्रिंसिपल ने आश्वासन दिया। उनका कहना था मेरे साथ जो हुआ वो सरासर जुर्म है और इसकी पूरी जाँच होगी। उन्होंने मुझे ध्यान से याद करने को कहा कि मुझे उस लड़के का नाम या क्लास या और कोई पहचान पता हो तो बताऊँ। मैंने फिर से कहा कि मुझे नहीं याद।

तो सबसे पहले वो हाथ पकड़कर मुझे क्लास में ले गए और पूछा कि हादसा कहाँ हुआ। मैं अपनी कुर्सी पर गया और बताया कि मैं यहाँ बैठा अपना टिफिन खा रहा था जब वो लड़का आया और छतरी ले गया। उन्होंने मेरे आसपास के बच्चों से पूछा कि किसी और ने ये घटना देखी? सब बच्चे एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। मैंने ये बात बहुत सोच-समझकर बोली थी क्योंकि इंटर्वल में कोई बच्चा क्लास में बैठा नहीं मिलता था। सब बाहर ग्राउंड में भागदौड़ मचा रहे होते।

और यही हुआ भी। कोई चश्मदीद गवाह नहीं था। प्रिंसिपल सर को यहीं रुक जाना चाहिए था। लेकिन मैं समझ सकता हूँ, उनके अन्दर भी न्याय का एक तूफान उठ रहा होगा। इसलिए अब वो मुझे लेकर बाहर निकले।

उन्होंने कहा अब हम स्कूल की हर क्लास में जाएँगे। बारहवीं क्लास से शुरू करेंगे और चौथी तक आएँगे – तुम हर बच्चे को ध्यान से देखना और बताना अगर उस गुण्डे को पहचान सको तो। एक बार के लिए मेरी मम्मी ने भी टोका कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है और आप इस बात को इतना सीरियसली ले रहे हैं यही हमारे लिए बड़ी बात है।

लेकिन प्रिंसिपल सर के अन्दर का सत्यान्वेषी जाग चुका था। उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं है, मैं इसके साथ रहूँगा। उन्होंने कहा कि मुझे बस हर क्लास के बच्चों को एक नज़र देखना है और चुपचाप उन्हें बता देना है कि मुजरिम कौन है।

अब मेरे लिए सच कहने का वक्त भी निकल चुका था। अपने झूठ को छुपाने के लिए मैं इतना आगे आ गया था कि अब पीछे मुड़ने का सवाल ही नहीं था। अगर मैं इस समय कह देता कि मैंने तो झूठ बोला था जी, तो मुझे पूरा यकीन है ना सिर्फ प्रिंसिपल सर बल्कि स्कूल का हर शान्तिप्रिय टीचर भी अगले आठ-दस दिन तक रोज़ मुझे पीटता, एंटीबीयोटिक दवा के कोर्स की तरह, दिन में तीन बार।

तो प्रभु का नाम लेकर बड़े अरमानों से स्कूल की परिक्रमा शुरू हुई। हम सबसे पहले बारहवीं कक्षा के सेक्शन 'ए' में गए। प्रिंसिपल सर ने पहले अन्दर जाकर कुछ कहा और फिर मुझे अन्दर भेजा गया। उस क्लास के टीचर मेरे साथ-साथ चले और मैं अपने से नौ-दस साल बड़े,

सबसे पहले वो हाथ पकड़कर मुझे क्लास में ले गए और पूछा कि हादसा कहाँ हुआ। मैं अपनी कुर्सी पर गया और बताया कि मैं यहाँ बैठा अपना टिफिन खा रहा था जब वो लड़का आया और छतरी ले गया। उन्होंने मेरे आसपास के बच्चों से पूछा कि किसी और ने ये घटना देखी? सब बच्चे एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

और कम से कम डेढ़ फुट ऊँचे लड़कों की शक्लें पहचानने का नाटक करता रहा। कुछ लड़के बदले में मुझे घूर रहे थे और कुछ मुस्करा रहे थे। अगर उनमें से किसी ने सचमुच भी मेरी छतरी चुराई होती तो मेरी हिम्मत नहीं थी कि उनका नाम प्रिंसिपल का बता सकूँ। मन तो किया बाहर आकर कह दूँ कि ये बहुत घटिया आइडिया है आपका। लेकिन फिर याद आया कि असली घटिया चीज़ तो मेरे द्वारा बनाया गया झूठ ही है।

खैर, यही काम हमने अगले दो-तीन घण्टे लगाकर बहुत सारी क्लासों में किया। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाते, मेरा डर भी उबलता जाता कि अभी मुझे थप्पड़ पड़ेगा और प्रिंसिपल सर बोलेंगे कि झूठ की डोर इतनी भी मत खींचो कि टूट जाए। फिर एक बार को मन में आया कि किसी भी बड़े बच्चे की तरफ इशारा करके बोल दूँ कि यही है वो बालक जो मुझे धमकी देकर छतरी ले गया। लेकिन इस प्लान में कई तरह के खतरे थे। पहला तो ये कि ये सच नहीं था और मैं किसी भी निर्दोष को फँसाने की पापी हरकत सोच रहा था। दूसरा अगर उस बच्चे ने कह दिया कि कल तो मैं स्कूल आया ही नहीं था या इंटर्वल में अपने उस दोस्त के साथ था या आप मेरे घर की तलाशी ले लो, छतरी खोज लो। इन सबका मतलब ये होता कि लोगों का मुझ पर से भरोसा उठ जाता और फिर मेरी पूरी कहानी ढह जाती।

इसलिए मैंने क्लास-क्लास घूमकर हर बच्चे की शिनाख्त की और सबको बाइज़्ज़त बरी किया। सोचो, नौ साल का छोकरा पूरे स्कूल में दरोगा बनकर घूम रहा था कि किसी बड़े बदमाश को आज पकड़ ही लेगा।

जब सैर खतम हुई तब तक प्रिंसिपल सर भी थक चुके थे और मैं भी। मैंने कहा कि मुझे बिलकुल याद नहीं आ रहा कि वो कैसा दिखता था। हालाँकि तब तक मैंने ये झूठ अपने अन्दर इतना पक्का कर लिया था कि मेरे दिमाग में उस घटना की एक तस्वीर बन चुकी थी। आज मैं चालीस बरस का हूँ और अभी भी मैं उस काल्पनिक चोर की शकल अपने दिमाग में देख सकता हूँ। ये शकल मेरी ही बनाई हुई है। लेकिन इस झूठ को सच जैसा बनाने के लिए मेरे लिए ये ज़रूरी था।

इस काल्पनिक तस्वीर में वो लड़का सातवीं या आठवीं क्लास का है। उसके छोटे-छोटे बाल हैं, कान थोड़े बड़े हैं, नाक सुन्दर हैं, और जब वो हँसता है तो उसकी आँखें एकदम बन्द-सी हो जाती हैं। वो हँसता है तो दिल खोलकर हँसता है। लेकिन जब वो गुस्सा होता है तब यही आँखें एकदम बाहर को निकल आती हैं और किसी भी छोटे बच्चे को डरा सकती हैं।

खैर गनीमत है कि प्रिंसिपल सर ने पुलिस बुलाकर मुझे मुजरिम का स्केच बनवाने को नहीं कहा और एक तरह से बात यहीं खतम कर दी।

उसके अगले हफ्ते दस दिन तक घर पे मुझसे अक्सर पूछा जाता रहा कि वो बच्चा दोबारा तो नहीं आया धमकाने वगैरह। 'था ही नहीं तो आएगा कैसे' कहने का मन हुआ। लेकिन सच बोलने के लिए बड़ी हिम्मत चाहिए जो उस वक्त मैं नहीं जुटा पाया।

बरसात का मौसम था तो मुझे छतरी की जगह एक रेनकोट ही ला दिया गया। उसका रंग समुद्री हरा नहीं, खाकी था और वो उस छाते के मुकाबले बड़ा साधारण दिखता था। लेकिन अब वही मेरी किस्मत थी और मैंने उसे खुशी-खुशी अपना लिया।

हफ्ते और महीने गुज़रते गए और ये घटना एक धुँधली याद बनकर रह गई। फिर करीबन एक साल बाद, जब मैं चौथी क्लास में आ चुका था, एक दिन प्रार्थना सभा में सब बच्चों को थोड़ी देर और रुकने को बोला गया।

एक टीचर सामने स्टेज पर आईं और उन्होंने माइक पर बताया कि स्कूल का स्टोर रूम इस हफ्ते खोला गया और उसमें बहुत-सा पुराना खोया सामान मिला है। अब वह एक-एक कर के ये सामान सबको दिखाएँगी और जिस बच्चे का जो सामान हो वो आकर उसे ले जाए।

कुछ खोए हुए स्वेटर, मफलर, पेंसिल बॉक्स, पैन, टिफिन बॉक्स और स्केल वगैरह के बाद उन्होंने एक ध्वस्त हालत में लेकिन नई दिखने वाली छतरी हवा में ऊपर उठाई और कहा, "ये छतरी जिसकी भी हो वो ले जाए।" जब छतरी दो बार हवा में लहराई जा चुकी थी तो उसकी धूल थोड़ी छँटी और उसके नीचे से उसका समुद्री हरा रंग झलकने लगा। मेरी रूह काँप गई।

और ज़रूर मेरे चेहरे पर पसीने के निशान आए होंगे क्योंकि मैंने देखा कि प्रिंसिपल साहब भी मुझे ही घूर रहे हैं। मैं चुपचाप खड़ा रहा – मानो मुझ पर किसी ने सम्मोहन फेर दिया हो और मेरे हाथ-पैर पत्थर के हो गए हों।

किसी ने उस छतरी पर अपना हक नहीं जताया और टीचर ने उसे वापस एक बक्से में डाल दिया। हम सब अपनी-अपनी क्लास की तरफ बढ़े। लेकिन जिसका मुझे डर था वही हुआ। एक टीचर ने आकर मेरे कन्धे पे हाथ रखा और कहा कि तुम्हें प्रिंसिपल सर बुला रहे हैं।

मैं उनके कमरे में पहुँचा और कुछ बोल पाता उसके पहले ही उन्होंने कहा, "कल अपने मम्मी-पापा को लेकर स्कूल आना। उनसे बात करनी है।" मैंने "हाँ" में सिर हिलाया और वापस बाहर

निकल आया। नौ साल की उम्र में मेरे दिमाग में इतना विस्तृत झूठ बनाने की सारी हिम्मत और चतुराई थी। लेकिन अब दस साल का होने के बाद ना मेरे पास शब्द बचे थे, ना हिम्मत। इतना भी नहीं हुआ कि मैं प्रिंसिपल सर को वहीं 'सॉरी' बोल दूँ।

लेकिन शाम को घर आकर मेरे पास कोई और चारा नहीं बचा था। मैंने रोते-रोते सब सच बता दिया। कैसे मुझसे छतरी खो गई, कैसे मैंने उस शर्म को छुपाने के लिए झूठ बोला, जो आगे बढ़ता ही गया। काफी डाँट पड़ी – शायद एक-दो चाँटे भी – जो मैंने वाजिब सज़ा मानकर ग्रहण किए।

अगले दिन स्कूल जाकर भी मम्मी-पापा ने माफी माँगी। मैंने भी बहुत बार सॉरी बोला। प्रिंसिपल सर ने कहा कि जो भी खोया हुआ, या छूटा हुआ सामान मिलता है उसे तुरन्त स्टोर रूम में रख दिया जाता है। जब कोई बच्चा उसे खोजते हुए आता है तो लौटा दिया जाता है। लेकिन क्योंकि मैंने कह दिया था कि किसी ने छतरी छीनी थी इसलिए उस दिन स्टोर रूम में नहीं खोजी गई। वरना अगले ही दिन मिल जाती।

उन्होंने छतरी हमें लौटाई। स्टोर रूम में अन्य भारी सामान के नीचे दबकर, और वक्त के सितम सहकर उसकी हालत खराब हो चुकी थी। ना वो ठीक से खुलती थी, ना ही किसी को बारिश से बचा सकती थी। बस उसका समुद्री हरा रंग अभी भी वैसा ही था। एक ऐसे समुद्र जैसा जिसकी मैं तब तक कल्पना भी नहीं कर सकता था।

इक मक्खी थी

शादाब आलम
चित्र: अबीरा बन्धोपाध्याय

इक मक्खी थी थोड़ी हटकर
कीचड़, गोबर, कूड़ा-कचरा
बचा-खुचा थाली का खाना
उसे नहीं अच्छा लगता था
इन सब चीज़ों पे मँडराना।
भेड़चाल से रहती कटकर
इक मक्खी थी थोड़ी हटकर।

जामुन, बड़हल, बेर, पपीता
आमों के ना पास फटकती
पेड़, पहाड़ों पे जो उगते
उन डालों पे सदा लटकती।
उड़ती थी चीलों से सटकर
इक मक्खी थी थोड़ी हटकर।

बैठ छिपकली के कन्धे पर
भिन-भिन, भिन-भिन गाना गाती
मकड़ी के जाले में घुसकर
खेल-कूदकर वापस आती।
डर-दहशत से लड़ती डटकर
इक मक्खी थी थोड़ी हटकर।

लॉकडाउन और कलात्मकता

पिनहोल बोर्ड से सूर्य ग्रहण की तस्वीर, 2020

इशिता देबनाथ बिस्वास
अनुवाद: लोकेश मालती प्रकाश

पिछले कुछ महीनों में बन्द जगहों में सिमटे रहने को मजबूर होकर हम सभी अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगियों में ठहराव के आदी होते जा रहे हैं। मैं पहले से कहीं ज़्यादा सपने देख रही हूँ। एक और चीज़ जो हुई है वह यह है कि मैं चीज़ों को करीब से देख रही हूँ। मैं पहले कभी भी इतनी शान्त नहीं रही कि अपने आसपास की हवा की बारीक हरकतों को महसूस कर सकूँ। मुझे पता है कि किस तरह से किसी-किसी दिन पत्ते दूसरे दिनों से ज़्यादा झूम रहे होते हैं और किसी-किसी दिन उनमें कोई हलचल ही नहीं होती।

इस साल के शुरू में मुझे बालकनी के फर्श पर कागज़ ततैये का छोटा-सा टूटा हुआ छत्ता मिला। कुछ महीनों बाद मैंने पाया कि घर के एक कोने में एक बड़ा छत्ता सफलतापूर्वक बना हुआ था। मैंने एक कुम्हार ततैये द्वारा पानी के पाइप के नीचे बनाए जा रहे छत्ते की प्रक्रिया को भी गौर से देखा। नोटिस किया कि हर सुबह कचड़ा उठाने वाली गाड़ी को चलाने वाले युवा लड़के के मोबाइल फोन में बजने वाले बॉलीवुड के गाने रात को पहरा देने वाले बुज़ुर्ग चौकीदार के फोन पर बजने वाले गानों से बिलकुल अलहदा होते हैं।

दो घर छोड़कर एक लड़की रहती है जिसके साथ मैं बचपन में क्रिकेट खेला करती थी। उसे काम से जुड़े फोन कॉल्स बालकनी में खड़ी रहकर करना पसन्द है। और गली की दूसरी तरफ रहने वाली भाभी शाम को छत पर अपने दोस्तों से अपने बॉस की बुराई करके मज़े लेती हैं। अब तो मुझे यह भी पता चल गया है कि अप्रैल में मैं अपने कपड़ों को सूरज ढलने तक बालकनी में आ रही धूप में सुखा सकती थी। लेकिन अब नवम्बर में सूरज की किरणें 3 बजे तक ही बालकनी से दूर चली जाती हैं। और मुझे यह भी पता है कि देर शाम मैं कब छत पर खड़े होकर धूप की गन्ध को सूँघ सकती हूँ जो मेरे घर से दस घर दूर रहने वाला परिवार जलाता है। वे शायद महामारी के खतरे को दूर भगाने की उम्मीद में ऐसा करते हैं। मेरे लिए ये रोज़मर्रा की उबाऊ, सिमटी हुई ज़िन्दगी में एक ताज़ी हवा के झोंके की तरह होता है।

अपने शरीर और मन में दिन की गर्मी और रात की ठण्डक से हो रहे बारीक बदलावों को मैं अब और शिद्दत से महसूस कर सकती हूँ। अब मैं चाँद की कलाओं को भी अच्छे-से समझती हूँ। रमज़ान के आधे चाँद से लेकर गुरु पूर्णिमा के पूरे चाँद के अलग-अलग चेहरे देखने में मुझे खूब मज़ा आया। और इसमें बोनस था ग्रीष्म अयनान्त (solstice) पर दुर्लभ सूर्य ग्रहण को देख पाना।

महज़ एक वायरस ने मेरी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में इतनी जागरूकता ला दी है। मुझे पक्का यकीन है कि मैं अकेली शख्स नहीं हूँ जिसे बन्दिशों में इतनी सारी चीज़ें महसूस हो रही हैं। तो फिर जबकि हम हर रोज़ कितना कुछ अन्दर ले रहे हैं, इन सबकी अभिव्यक्ति का क्या? अपने अन्दर के अज़ाब को बाहर कैसे निकालें? वैसे यह सब लिखना भी मेरे लिए खुद को अभिव्यक्त करने जैसा होता जा रहा है। और इस बारे में सोचते हुए यह कौतुहल होता है कि इतिहास में अलग-अलग तरह से बन्दिशों में कैद कलाकारों ने खुद को कैसे अभिव्यक्त किया। यहाँ मैं ऐसी ही कुछ कहानियाँ साझा करने जा रही हूँ।

तुमने मेक्सिको की मशहूर चित्रकार फ्रीडा काल्हो का नाम सुना होगा जो अपनी उद्दात अभिव्यक्तियों के लिए जानी जाती हैं। वे नारीवादी चित्रकला की अगुवाई करने वालों में से एक मानी जाती हैं। पुरुषों के दबदबे वाली कला की दुनिया में उन्होंने बिना किसी झिझक के स्त्री शरीर के रैडिकल चित्र बनाएँ। गौरतलब है कि फ्रीडा जीवन भर एक बीमारी और दुर्घटना में लगी गम्भीर चोट से जूझती रहीं। इसके चलते उन्हें अपनी ज़िन्दगी का ज़्यादातर हिस्सा बिस्तर पर बिताना पड़ा। उनकी चोटें ही उनको कला की दहलीज़ पर ले गईं – अपने बिस्तर

अपने बिस्तर पर लेटकर चित्र बनातीं फ्रीडा।

द वुंडेड डियर, 1946

में सिमटे हुए अपनी हालत से निजात पाने के लिए उन्होंने बिस्तर पर ही अपना स्टुडियो बना लिया। बिस्तर पर लेटे हुए चित्र बनाने के लिए उन्होंने खास किस्म का ईज़ल बनवाया। इस ईज़ल के ऊपर एक आईना लगाया गया था जिसमें वे खुद को देख सकें और वो चित्र बना सकें जिनकी वजह से इतिहास में उनका खास मकाम है।

एक और कहानी जो मैं सुनाना चाहती हूँ वह है अर्जेंटिना के एक राजनीतिक बन्दी युआन कार्लोस रॉड्रिगुएज़ की। एक यूनियन से जुड़ाव की वजह से अर्जेंटिना की क्रूर सरकार ने युआन को उनकी गर्भवती पत्नी मारीसा के साथ 1976 में गिरफ्तार कर लिया था। शुरुआत में तो उनका बाहरी दुनिया से कोई सम्पर्क ही नहीं था। कार्लोस ने अपनी पत्नी को एक बार तब देखा जब उनका बच्चा पैदा हुआ। जल्द ही उनके बच्चे को उनसे लेकर उनके परिवार के हवाले कर दिया गया। कार्लोस ने आठ साल जेल में गुज़ारे। बाद में, जब जेल की पाबन्दियों में थोड़ी ढील दी गई तब कैदियों के लिए चिट्ठियों का लेन-देन करना और अखबार लेना सम्भव हुआ। इसी दौरान एक अखबार में छपे चित्रों से कार्लोस को प्रेरणा मिली और उन्होंने अपने बेटे पैट्रीशियो के लिए चित्र बनाना शुरू किया। जेल के कैदियों को कागज़ व कलम तो मुहैया किया जाता था मगर रंगों के लिए कार्लोस ने जेल में मिलने वाले खाने-पीने की चीज़ों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। लाल और गुलाबी रंग के लिए चुकन्दर, काही (maroon) रंग के लिए कॉफी, हरे के लिए जड़ी-बूटी वाली चाय, और नीले रंग के लिए स्याही में पानी मिलाया। इनमें से कई बढ़िया चित्रों को जेल के पहरेदारों ने नष्ट कर दिया।

इन चित्रों के बारे में एक लेख *चकमक* में दिसम्बर 1987 में छपा था।

मैं ऐसे कुछ मार्मिक चित्र यहाँ साझा करती हूँ जिनको उस पिता ने बनाया था जो अपने बच्चे से तब तक मिला ही नहीं था।

इन तमाम दृश्यों के बारे में सोचने के दौरान ही मुझे सोशल मीडिया पर अपनी मित्र व चित्रकार शिवांगी सिंह के बनाए कुछ चित्र देखने को मिले। जब मैंने उसे अपने इन खयालों के बारे में बताया तो हम जो कुछ देख-महसूस कर रहे थे उनके बीच कुछ गज़ब के जुड़ाव देखने को मिलें। महामारी की शुरुआत से शिवांगी ने जो चित्र बनाए हैं उनको यहाँ साझा करते हुए मैं काफी रोमांचित हूँ। इसके अलावा, खुद यह चित्रकार क्या महसूस कर रही है उसकी भी एक बानगी पेश करती हूँ।

शिवांगी:

शाम 5 बजे मेरी खिड़की के बाहर

जब लॉकडाउन शुरू हुआ तो मैं वाकई बड़ी शुक्रगुज़ार थी कि मेरे घर में खिड़कियाँ हैं। इतने लम्बे समय तक घर में बन्द रहने का मतलब था कि आम तौर पर मैं जितना बाहर झाँकती थी उससे ज़्यादा झाँकने लगी। सूरज उगने से उसके डूबने तक रोशनी जितने पैटर्न बनाती है मैंने वह देखना शुरू कर दिया। मेरी दिनचर्या में काफी खुलापन था जिस वजह से मेरे लिए यह देखना मुमकिन था कि सुबह रोशनी कहाँ से शुरू होती है और भोर के ठीक पहले वह किधर से निकलती है। शाम 5 बजे मैं रोशनी को पश्चिम में डूबता हुआ देखती थी। मैं देख सकती थी कि वह किस तरह दरख्तों के

बीच कितनी ही परछाइयाँ, रूप और आकार खींच देती थी। मैंने तय किया कि जो भी देख रही हूँ उसे अपनी डायरी में भी दर्ज करूँगी। इस तरह मैंने अलग-अलग वक्त में खिड़की से बाहर दिखने वाले इन अलग-अलग दृश्यों का चित्र बनाना शुरू कर दिया।

ये वाला चित्र शाम 5 बजे बनाया गया था।

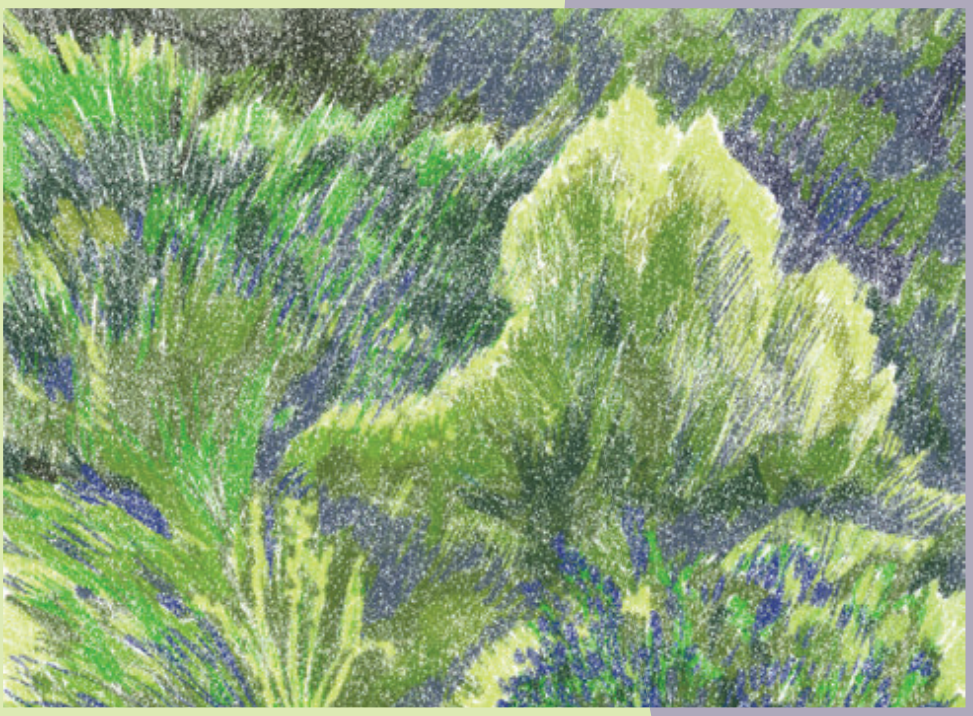

शाम 5 बजे मेरी खिड़की के बाहर

पेड़ और बादल

दूसरा चित्र भी देखने के बारे में ही है, लेकिन इसे करते समय मैं दोहराव के बारे में सोच रही थी। एक दिन मुझे आसमान में खूब सारे बादल दिखाई दिए और उनके पैटर्नों का दुहराव मुझे आकर्षक लगा। मैंने एक रेखाचित्र बनाया और ये कविता लिखी–

स्केच बुक की तहों के बीच
एक या दो या पाँच या नौ बादल
सुर्ख आसमान में तैरते
एक बेहतर दुनिया की तरफ

फिर मैंने सोचा कि इसका चित्र बनाऊँगी। यह उस खास लम्हे को याद करने का एक तरीका था। वह दिन भी कुछ ऐसा था जब एक के बाद दूसरी बुरी खबरें चली आती हैं और दुनिया में कुछ भी ठीक नहीं लगता। ऐसे निराशा भरे दिन जब मैं दुनिया के हालात से थक जाती हूँ, आसमान में देखना मुझे थोड़ा सुकून देता है।'

शीलू की क्लास

चित्र व कहानी : राही डे रॉय

गर्मी की छुट्टियाँ आईं और चली गईं। स्कूल बन्द ही रहे। महामारी के शुरुआती दिनों में शीलू के मम्मी-पापा घर पर उसके साथ ही रहते। लेकिन जल्द ही उन्हें वापिस काम पर जाना पड़ा। जब वे काम पर जाते तो शीलू बगल वाली आंटी के घर रहती। शीलू को आंटी कुछ खास पसन्द नहीं थीं। क्योंकि वह हमेशा ऐसे सवाल पूछती थीं जिनका जवाब उसे पता नहीं होता था।

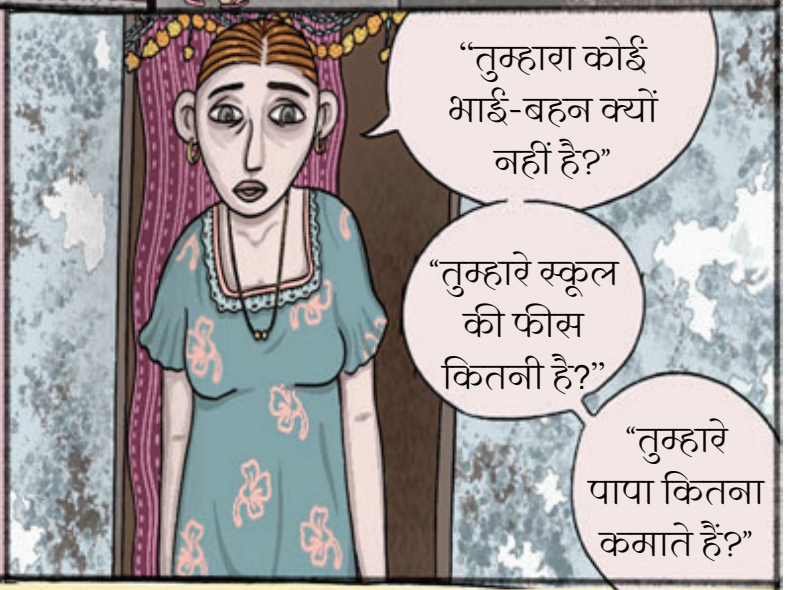

अगर शीलू कोई नई ड्रेस पहनती, तो वे ज़रूर टोकतीं।

लेकिन आंटी खाना बहुत अच्छा बनाती थीं। और इससे भी अच्छी बात ये थी कि उनके घर में बिल्ली के दो छोटे बच्चे थे।

दोपहर के खाने के बाद आंटी आराम करतीं। यह शीलू के खेलने का समय होता। खेलने के लिए पीछे का पूरा बरामदा था।

उसके ज़्यादातर खेल स्कूल से जुड़े होते। अपने दोस्तों से बातें करना, लंच ब्रेक में इधर-उधर दौड़ना, कहानियाँ सुनना – उसे ये सब याद आता।

उसे गीता मैडम याद आती।

जब गीता मैडम किसी बच्चे को डाँटतीं तो अपना सिर आजू-बाजू हिलातीं। तब उनके बालों में लगी क्लिप्स चमकतीं। ।

शीलू भी जब बिल्ली के दोनों बच्चों को डाँटती तो अपना सिर हिलाती और उँगलियाँ नचाती।

अच्छी बिल्लियाँ ऐसा नहीं करतीं!!

लेकिन शायद वह कुछ ज़्यादा सख्त थी। क्योंकि जल्द ही लंच के ठीक बाद बिल्ली के वो बच्चे गायब होने लगे।

पौधों को पढ़ाने में भी कुछ खास मज़ा नहीं आया।

फिर उसे एक आइडिया आया।

उसने चॉक से दीवार पर अपनी क्लास बनाईं। उसमें दोस्त बनाए, अकेले रहने वाले बनाए, आलसी और मेहनती बच्चे बनाए। उसने बहुत सारे शरारती बच्चे भी बनाए ताकि वह उन्हें डाँट सके।

ये क्या हो रहा है!!

डाँटने में कितना मज़ा आता है ना।

लेकिन डाँट खाने में बिलकुल भी नहीं।

अनुवाद: कविता तिवारी

क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—
सोचो कि तुम बड़े बन गए और तुम्हारे बड़े, बच्चे बन गए। तो तुम उनसे क्या कहना चाहोगे...

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है —
गोल चीज़ें लुढ़कती क्यों हैं?
अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

मैं अपने पापा को डाँट लगाऊँगी। डाँट लगाने में बड़ा मज़ा आता है। मैं उनको कहूँगी इत्ती देर से किते खेल रये थे।

रोहिनी अहिवार, चौथी, प्राथमिक शाला गम्भीरिया, सागर, मध्य प्रदेश

मैं उनको हर एक चीज़ सिखाऊँगा,
उनको टॉफी, चॉकलेट दूँगा,
उनके गन्दे मार्क्स आने पर डाटूँगा,
हर एक काम ढंग से करना सिखाऊँगा,
मैं भी अपने माता-पिता की तरह बन जाऊँगा।

मैत्रेय श्याम, दसवीं, सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल, जनकपुरी, नई दिल्ली

जब मैं अपने दादा-दादी से बड़ी और वो हमसे छोटे होंगे तो मैं उन्हें कभी नहीं डाटूँगी। उनसे प्यार से प्यार करूँगी। उन्हें दुकान से सामान लाने के लिए भेजूँगी और घर के सारे काम करूँगी – खेती करना, सफाई करना, परिवार की देखभाल करना।

रिया कुमारी, छठवीं, ग्राम बड़हुलिया, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

अगर ऐसा हुआ तो मैं कहूँगा कि मैं छोटा ही रहूँगा क्योंकि बड़े होने पर मुझे ज़्यादा काम करना पड़ेगा। छोटे में तो मैं खेलता-कूदता रहूँगा। पर बड़े में मैं खेलूँगा नहीं। इसलिए छोटा ही ठीक है।

मंगलेश, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

अगर ऐसा हुआ तो मैं उनको कम व ज़्यादा अच्छा खाना नहीं दूँगा और उनकी कोई बात नहीं सुनूँगा। क्योंकि वो लोग भी मेरी कोई बात नहीं सुनते और ज़्यादा अच्छा खाना भी नहीं देते।

ऋषभ, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

मैं अपने बच्चों को कुछेक खेलने की चीज़ लाकर दूँगा ताकि मेरे बच्चे स्कूल से आकर उन चीज़ों से खेल सकें। और खेलने के लिए बाहर नहीं जाएँ। आराम से पढ़ाई करें और आराम से जो मन करे वो करें। मैं उनसे कहूँगा कि बाहर ज़्यादा ना घूमें व कोरोना से भी बचे रहें।

वरुण, पाँचवीं, एसडीएमसी स्कूल, हॉज़ खास, नई दिल्ली

जो कोई बड़ा हो जाता है उसे अपने बचपन की यादें सताने लगती हैं और उसे फिर से बच्चा बनने की इच्छा होती है। ऐसा बच्चों के साथ भी होता है। उन्हें बड़ा होने की जल्दी होती है। अगर मैं बड़ी हो जाऊँ और बड़े बच्चे बन जाएँ तो मैं उन्हें कहूँगी कि वो अपने बचपन का भरपूर आनन्द उठाएँ।

सिल्विया बामनिया, बारहवीं, उत्कृष्ट विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

अगर मैं बड़ी हो जाऊँ तो मैं उनसे कहूँगी कि अब से वही होगा जो मैं कहूँगी। मैं अपने घर में करेले की सब्ज़ी कभी नहीं बनने दूँगी। और आराम से घूमने भी जाऊँगी। क्योंकि वे लोग मुझे लॉकडाउन में बाहर नहीं जाने देते। पर खुद हमेशा बाहर ही घूमते रहते हैं।

अदिति बिष्ट, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: तन्वी, तीसरी, सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली

यदि ऐसा हुआ तो मैं उन्हें खूब डाँटूँगा और फिर पूछूँगा कि अब कैसा लग रहा है जब डाँट पड़ी तो। याद करो कई बार आप हमें समझाने का बहाना करते हुए हमें डाँटते थे। कई बार तो हम बिना गलती के भी डाँट खाते हैं तब हमारे मन पर क्या बीतती थी। अब समझ आया जब आप छोटा बताकर कई बातों को हमसे साझा नहीं करते, जो हम जान लेते तो आपकी मदद कर पाते। पर आप हमें नहीं बताते थे। इस कारण हमारी उत्सुकता बनी रहती थी पर उसकी कद्र नहीं की जाती थी। आप हमारी कई इच्छाओं को टाल देते थे। जैसे कभी ज़्यादा रात तक जागकर पढ़ना, सुबह देर से उठना, कई बार स्कूल जाने का मन नहीं होने पर भी स्कूल भेजना। मैं बस यही कहना चाहता हूँ कि वे इन बातों को समझें और यदि वे अपने सोचने के तरीके को बदल पाए तो बच्चे हमेशा उनसे खुश रहें।

विवेक देवांगन, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

ऐसा होता तो मैं अपने भाई से कहता कि अभी तुरन्त जाकर पढ़ो। और माँ को बोलता कि टीवी मत देखो। और पापा को बोलता कि पढ़ा करो। मैं उनसे वो सब कहता जो वो मुझसे कहते हैं।

जयादित्य गौतम, तीसरी सी, द हेरिटेज स्कूल
वसन्त कुंज, नई दिल्ली

अगर ऐसा हो जाए तो मैं सिर्फ एक ही काम करूँगी – सोऊँगी और अपनी मर्ज़ी से खाना खाऊँगी।

राजुली, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली
उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

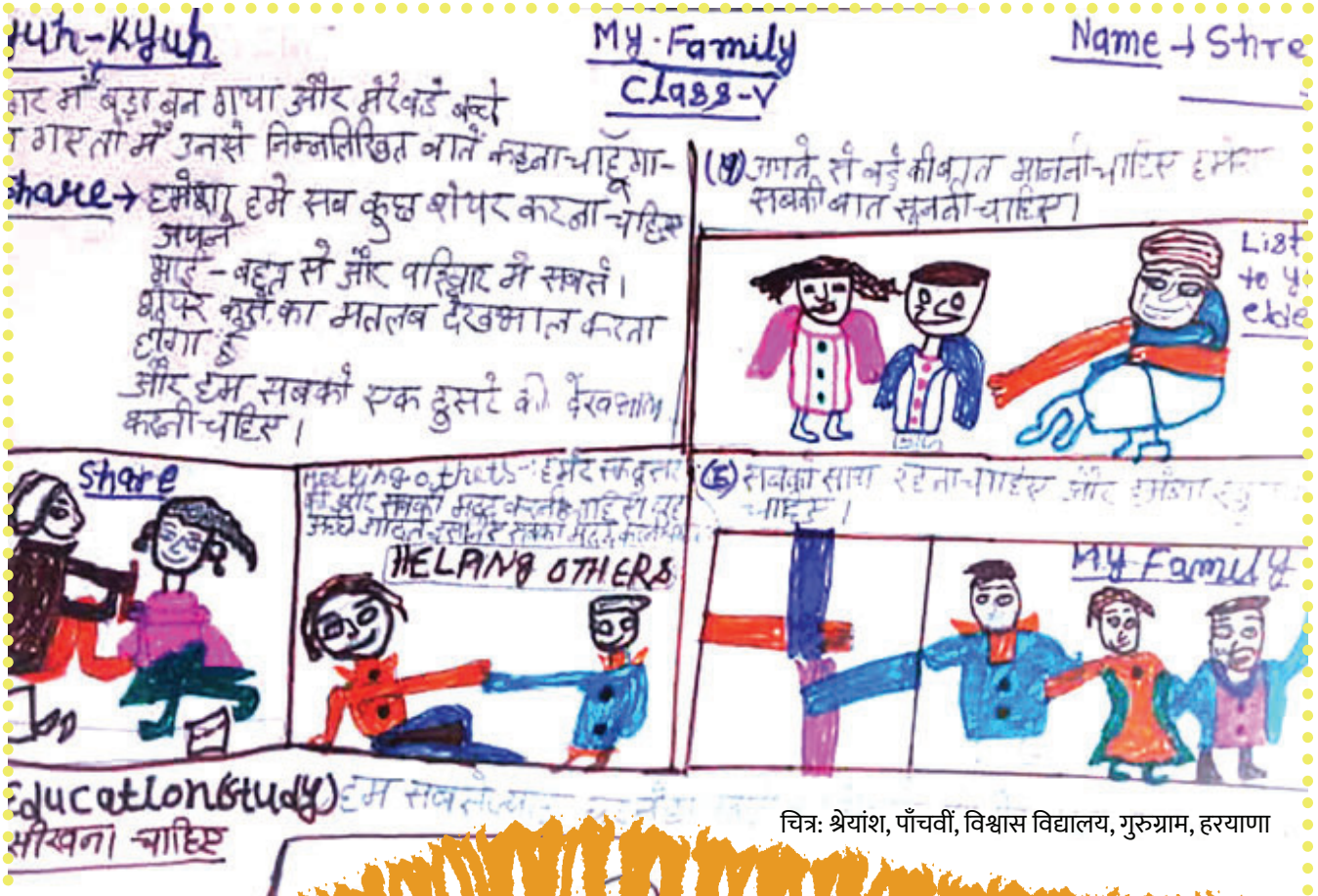

चित्र: श्रेयांश, पाँचवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

कल रात मैंने सपने में देखा कि मैं बहुत बड़ा हो गया और मेरी मम्मी छोटी। मैं मम्मी को बार-बार समझाता रहा कि मेरा कहना मानो, शैतानी मत करो। मैंने उन्हें समझाया कि बच्चों को बड़ों का कहना मानना चाहिए। मगर मम्मी किसी की सुनती ही नहीं थीं। मैं परेशान हो गया और जब आँख खुली तो एहसास हुआ कि बच्चे बड़ों को कितना परेशान करते हैं। मैंने सोचा अब मैं मम्मी का कहना मानूँगा और उन्हें परेशान नहीं करूँगा।

नील तमर, चौथी, एसडीएमसी स्कूल, हॉज़ खास नई दिल्ली

मैं तो यही कहूँगी कि जब मैं छोटी थी तब आप मुझ पर गुस्सा करते थे। अब मैं आपसे बड़ी हूँ तो आप मुझ पर हुक्म नहीं चला सकते। क्योंकि जब आप गुस्सा करते थे तो मुझे बहुत गुस्सा आता था।

सलोनी, नवीं, केरल पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

अगर ऐसा हुआ तो मैं उनसे पढ़ने को बोलूँगा और उनसे घर के काम भी करवाऊँगा क्योंकि वो भी मुझसे बहुत काम कराते हैं।

संयम, एसडीएमससी स्कूल, हॉज़ खास, नई दिल्ली

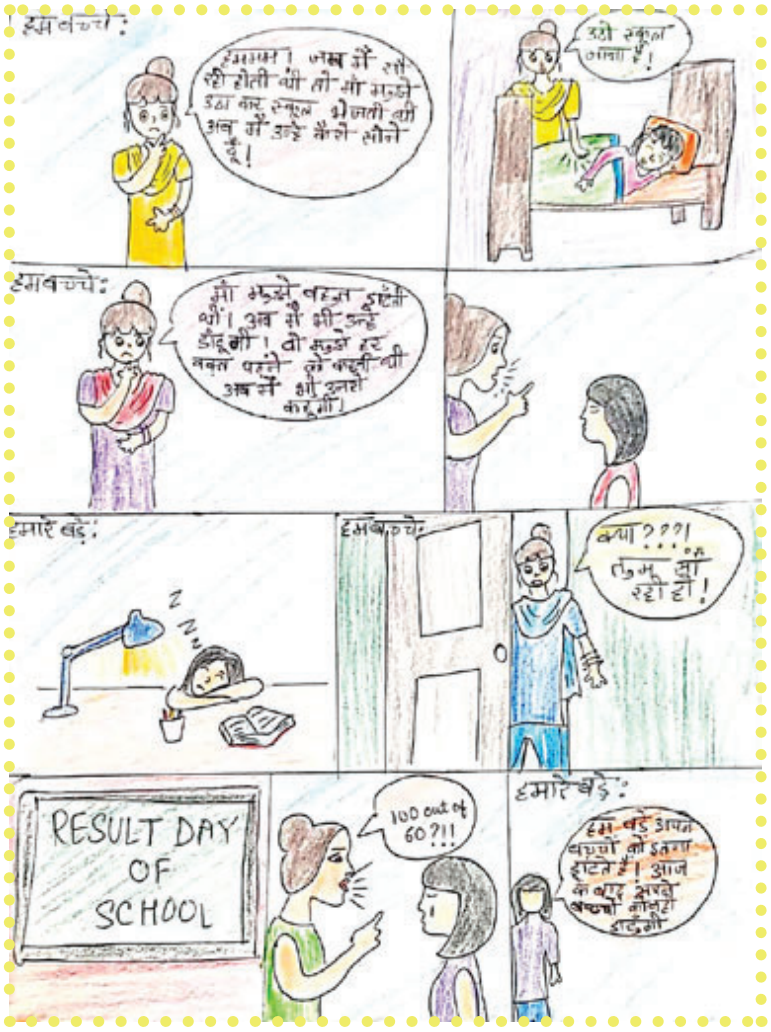

चित्र: रुशा जावेद, तेरह वर्ष, उड़ान एजुकेशनल ट्रस्ट, दिल्ली

अगर ऐसा हो जाए तो कितना मज़ा आएगा। मैं अपने मम्मी-पापा को कहूँगा कि मोबाइल मत देखो क्योंकि वह भी मुझे मोबाइल नहीं देखने देते। पापा को मैं कहूँगा कि हर रोज़ कसरत करो। अपने बड़े भाई से मैं पानी का गिलास लाने जैसे छोटे-छोटे काम कराऊँगा क्योंकि वो हमेशा मुझे डाँटकर मुझसे ऐसे ही काम करवाता है। दादा-दादी को मैं कहानियाँ पढ़कर सुनाऊँगा। पापा के साथ मैं खेलूँगा भी क्योंकि वो बड़े होकर भी मुझसे खेलने के खेल खेलते हैं। जिस तरह माँ मेरा पूरा ख्याल रखती है वैसे ही मैं भी उनका पूरा ख्याल रखूँगा पर क्या ऐसा हो पाएगा?

पराग शिंदे, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

आसमान में एक शानदार आतिशबाज़ी

17-18 नवम्बर को देखना तुम लियोनिड उल्का बौछार

संकेत राऊत

सर्दियाँ शुरू होते ही अन्तरिक्ष में रुचि रखने वाले अपनी नज़र आसमान की तरफ घुमा लेते हैं। ठण्ड की रातों में आसमान साफ रहता है, बादल नहीं होते हैं। ऐसे में कम्बल या शॉल ओढ़कर किसी पहाड़ पर या फिर घर की छत पर स्टार गेज़िंग का मज़ा कुछ अलग ही होता है। स्टार गेजिंग यानी कि तारों, ग्रहों को देखना, तारों को जोड़कर अलग-अलग आकृतियाँ बनाना और नक्षत्रों से जान-पहचान करना... ये सब तुम लेटे-लेटे अँधेरी रातों के आसमान के कैनवास पर कर सकते हो।

अब तक तुम में से कुछ लोगों के घरों में दीवाली की तैयारियाँ शुरू हो गई होंगी। पटाखों के लिए बजट भी तय हो गया होगा। लेकिन इस साल तुम दीवाली के कुछ दिनों बाद तक आतिशबाज़ी देख सकते हो और वो भी कीमती पटाखों के बिना। मैं यहाँ एक शानदार कुदरती आतिशबाज़ी की बात कर रहा हूँ।

17 नवम्बर की रात को तुम सिंह नक्षत्र में उल्काओं की बौछार (meteor Shower) देख सकते हो। इसे लियोनिड उल्का बौछार कहते हैं। दुनिया भर के खगोल प्रेमी बेसब्री से उल्का बौछार का इन्तज़ार करते हैं। वैसे लियोनिड उल्का बौछार हर साल 3 से 30 नवम्बर के बीच दिखाई देती है। पर 17 नवम्बर की रात से लेकर 18 नवम्बर की सुबह तक ये अपने चरम पर होती है।

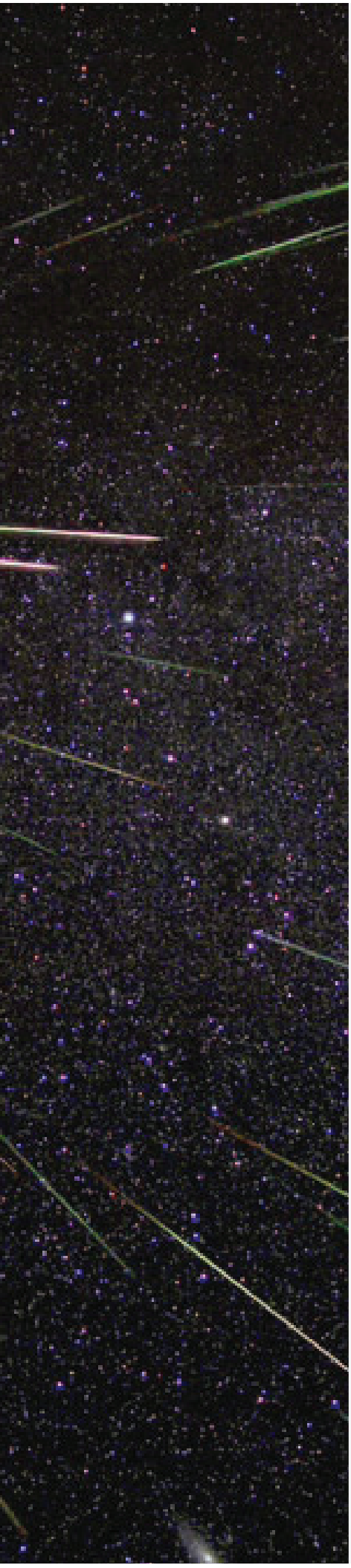

क्या होती है उल्का बौछार?

आम तौर पर उल्का बौछार का सम्बन्ध धूमकेतू के साथ होता है। सूरज का चक्कर काटते समय धूमकेतू जब उसके करीब जाते हैं तब सूरज की गर्मी के कारण धूमकेतू के कण यानी उस पर जमी धूल, बर्फीली गैस आदि चीज़ें पूँछ की तरह उसके पीछे तेज़ गति से छूटती जाती हैं।

जब धूमकेतू पृथ्वी के कक्ष से गुज़रता है तो ये कण व गैस पृथ्वी के गुरुत्वीय बल की चपेट में आकर पृथ्वी के वायुमण्डल की ओर खिंचे चले आते हैं। हमारे वायुमण्डल में घुसते ही ये उल्काएँ जल उठती हैं जिन्हें हम बौछार के रूप में देखते हैं। उल्काओं के जलने की चमक और रंग उनके आकार व उनके अन्दर के पदार्थ पर निर्भर करते हैं। जिस नक्षत्र में हमें ये दिखती हैं, उन्हीं के आधार पर इन उल्का बौछारों को नाम दिया जाता है। जैसे सिंह (Leo) में दिखें तो लियोनिड (Leonids), मिथुन (Gemini) में दिखें तो जेमिनिड (Geminids) वगैरह।

लियोनिड उल्का बौछार की खासियत

यह उल्का बौछार टेम्पल-टटल (Tempel-Tuttle) धूमकेतू से नाता रखती है। हर साल जब यह धूमकेतू पृथ्वी के कक्ष से गुज़रता है तो कुछ दिनों के लिए उत्तरी गोलार्द्ध के आसमान में शानदार बौछार देखने को मिलती हैं। लगभग दो हफ्तों के लिए यह धूमकेतू पृथ्वी के कक्ष से गुज़रता है तब हम लियोनिड उल्का बौछार देखते हैं। इन रातों को हम हर घण्टे दस उल्काओं तक देख सकते हैं। हर साल लियोनिड बौछार के चरम के दिन अलग होते हैं। इस दौरान हम हर घण्टे 20-25 जलती उल्काओं के रंगों और रोशनी की धाराओं का प्रदर्शन देख सकते हैं।

यह उल्का बौछार कब और आकाश में कहाँ दिखेगी?

नवम्बर में सिंह नक्षत्र में रात के 12 बजे के आसपास क्षितिज पर दिखाई

देने लगता है और तभी से यह उल्का बौछार भी देखने को मिल जाती है। अगर तुम पूर्व दिशा का क्षितिज देख सकते हो तो 12 बजे से ही तुम इस बौछार का लुत्फ उठा सकते हो। लेकिन अगर पूर्व दिशा में पहाड़ या इमारत हैं तो तुम्हें सिर्फ कुछ समय का इन्तज़ार करना होगा – सुबह के तीन-साढ़े तीन के करीब जब सिंह नक्षत्र क्षितिज से ऊपर पूर्व दिशा में दिखने लगता है तब तुम अपने घर के छत, आँगन या किसी मैदान से भी लियोनिड बौछार को देख सकते हो।

वैसे लियोनिड उल्का बौछार को देखने का सबसे अच्छा समय भोर के आसपास का ही होता है। 17 नवम्बर को चाँद भी रात 10 बजे के करीब ढल जाएगा। इसका मतलब है कि चाँद की रोशनी न होने के कारण इसका मज़ा भी डबल हो जाएगा।

सिंह नक्षत्र को पहचानने के लिए तुम इस नक्शे की मदद ले सकते हो।

उल्का बौछार देखते वक्त कौन-सी चीज़ों का ध्यान रखना चाहिए?

आसपास के दिए बुझा देना ताकि आसमान निहारने के लिए घुप्प अँधेरा रहे। फिर भी शहरों में आसपास काफी रोशनी होगी तो इससे आसमान में तारे और उल्का कुछ धुँधले दिख सकते हैं।

सर्दी का समय है तो गरम कपड़े साथ में रखना न भूलना।

और हाँ, उल्का बौछार देखने का तुम्हारा अनुभव कैसे रहा हमें ज़रूर लिख भेजना।

सड़कों पर निकली किताबों की एक नदी

मुदित श्रीवास्तव

कनाडा में एक शहर है, टोराँटो। यहाँ हर साल एक उत्सव मनाया जाता जिसे 'नुइ ब्लांश' कहा जाता है। फ्रेंसिसी में इसका मतलब होता है, 'सफेद रात' या यह कह लें कि 'जगमगाती हुई रात'। यह उत्सव समकालीन कला (Contemporary Art) पर केन्द्रित होता है। रात भर चहल-पहल बनी रहती है। शहर के सारे म्यूज़ियम और आर्ट गैलरीज़ रात भर खुली होती हैं। यह उत्सव शाम को 6 बजे से लेकर अगले दिन सुबह 6 बजे तक जारी रहता है। हर साल लोग इसका बेसब्री से इन्तज़ार करते हैं। एक रात के लिए पूरा शहर किसी एक बड़े स्टेज की तरह सज जाता है, सड़कों को ही आर्ट गैलरीज़ में तब्दील कर दिया जाता है। अलग-अलग तरह के नाटक, डांस, गीत-संगीत, और खान-पान रात भर जारी रहता है।

इसी उत्सव में एक बार शहर की सबसे व्यस्त सड़क 'हेगरमेन स्ट्रीट' से होने वाले शोर और प्रदूषण का विरोध करने के लिए कुछ कलाकारों ने एक तरकीब अपनाई। उन्होंने इस सड़क पर किताबें बिछानी शुरू कर दीं। कुल मिलाकर दस हज़ार किताबें सड़कों पर बिछा दी गईं। ये सारी किताबें 'द सैल्वेशन आर्मी' नाम की एक संस्था ने दान में दी थीं। सड़क के बगल से पैदल गुज़रता हुआ कोई भी व्यक्ति इन किताबों को उठा सकता था। अपनी पसन्द की किताब अपने घर ले जा सकता था या वहीं बैठकर भी पढ़ सकता था। ऐसा करने से कम से कम एक रात के लिए तो उस सड़क पर गाड़ियाँ नहीं चलीं। शोर और प्रदूषण को किताबों के ज़रिए रोक

तुम भी जानो

दिया गया। लोगों ने पैदल घूमना और किताबें पसन्द करना शुरू कर दिया। थोड़ी ऊँचाई से देखने पर ऐसा लगता था जैसे यह एक नदी हो। किताबों की नदी। देखते ही देखते कुछ घण्टों में एक-एक करके किताबें कम होती गईं और अगले दिन सड़क फिर से चालू हो गई।

इस कारनामे को अंजाम दिया स्पेन के कलाकारों के एक समूह ने जिसका नाम 'लुज़िन्तरप्तस' है।

क्या तुम अपने शहर में ऐसी नदी देखना चाहोगे? और क्या तुम इस तरह की किताबी नदी में एक डुबकी लगाना चाहोगे?

चमगादड़ों की दुनिया

चमगादड़ों की कुछ बातें

अगर तुम चॉकलेट खाते हो तो तुम्हें चमगादड़ों का शुक्रगुज़ार होना चाहिए। चॉकलेट कोको के बीज से बनती है जिनके फूलों का परागण चमगादड़ ही तो करते हैं!

दुनिया भर में चमगादड़ों की कई किस्में पाई जाती हैं। कीड़े-मकोड़े, फल-फूल, मकरन्द, मछली, मेंढ़क तो इनकी खुराक में शामिल हैं ही लेकिन कई बार ये अन्य चमगादड़ों को भी खा सकते हैं।

मिलो एक्सपर्ट से

रोहित चक्रवर्ती एक वाइल्डलाइफ बायॉलोजिस्ट हैं। उन्हें चमगादड़ों की खोजबीन करने में बहुत मज़ा आता है। वह चमगादड़ों पर काफी सारा शोध कर चुके हैं। और इस बात की उम्मीद करते हैं कि ऐसा करके वह इन जानवरों को बचा सकते हैं जिनसे उनको इतना प्रेम है!

चमगादड़ों की 120 से भी ज़्यादा किस्में भारत में मौजूद हैं। यह स्तनधारी जीव हैं और इनकी संख्या भारत में पाए जाने वाले किसी भी स्तनधारी जीवों के समूह से अधिक है। इनमें 'माउस-टेल्ड बैट', 'हॉर्स-शू' 'पीपीस्ट्रेलस' और 'शार्प-नोज फ्रूट बैट्स' शामिल हैं। दुनिया की सबसे बड़ी चमगादड़ भी भारत में पाई जाती है जिसे 'इंडियन फ्लाइंग फॉक्स' कहते हैं। दुनिया की सबसे छोटी चमगादड़ हमारे पड़ोसी देश म्यानमार में पाई जाती है। इसका वज़न एक अंगूर जितना ही होता है। इसे 'बम्बलबी बैट' कहते हैं।

क्या चमगादड़ मनुष्यों के लिए खतरनाक हैं?

कई फिल्मों में चमगादड़ों को डरावना और हमलावर जानवर बताया जाता है, जबकि असल में ऐसा नहीं है। अमूमन चमगादड़ ज़्यादातर इन्सानों से सावधानी बरतते हैं और उनसे दूर ही रहना पसन्द करते हैं। हाँ, लेकिन चमगादड़ से सीधा सम्पर्क करने, उन्हें या उनकी बीट को छूने से हमें कुछ बीमारियाँ तो लग सकती हैं।

रोहित, चमगादड़ दिन की अपेक्षा रात में ज़्यादा सक्रिय होते हैं — रात में देख कैसे पाते हैं?

उनकी नज़र बहुत अच्छी होती है। लेकिन वह अँधेरे में देखने के लिए अपने कानों का इस्तेमाल करते हैं। वह 'चिरप' की आवाज़ करते हैं। यह ध्वनि किसी भी चीज़ या दूसरे कीड़े-मकोड़ों से टकराकर उन तक वापस पहुँचती है। इस ध्वनि को वापस आने में जितना भी समय लगता है, उससे इन्हें पता चल जाता है, कि वह चीज़ या शिकार कितनी दूरी पर है और उसकी सही जगह क्या है।

इन्सान के कान इन आवाज़ों को ऐसे नहीं सुन सकते। लेकिन इन्हें एक छोटी-सी मशीन - 'बैट डिटेक्टर' - की मदद से आसानी से सुना जा सकता है। हर यह एक ऐसा यंत्र है जिससे चमगादड़ों की केवल इसी ध्वनि को सुनकर हम यह भी पहचान सकते हैं कि वो किस किस्म का चमगादड़ है।

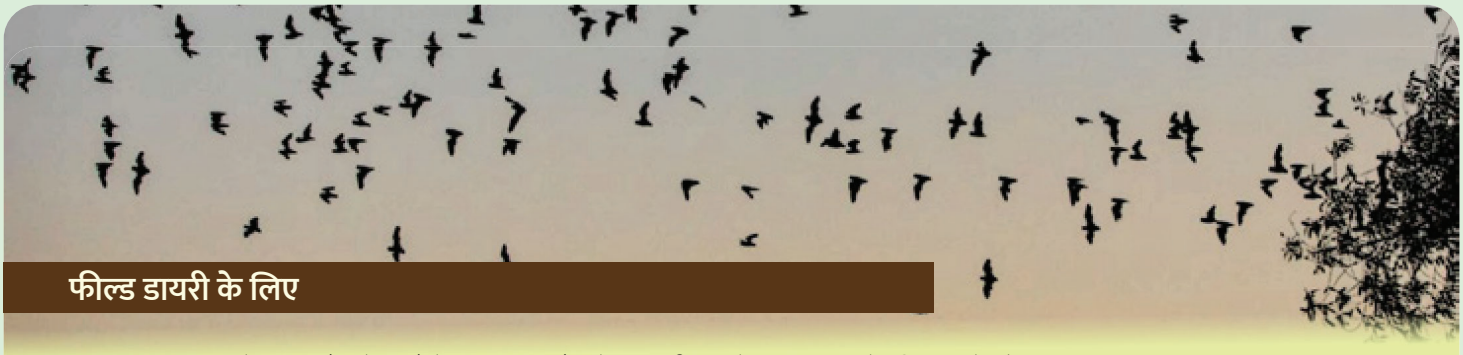

फील्ड डायरी के लिए

चमगादड़ अपने अड्डों से (सोने की जगहों से) सूर्यास्त से कुछ पहले निकलते हैं। कुछ बड़े चमगादड़ जैसे द इंडियन फ्लाइंग फॉक्स अक्सर बड़ी संख्या में फलों से लदे पेड़ों की ओर उड़ते हुए दिख जाते हैं। इनसे थोड़े छोटे चमगादड़ों को तुम सड़क पर लगे लैम्पों या पेड़ों के नीचे हवाई करतब करते देख सकते हो। यह तुम्हें रोशनी से आकर्षित कीड़ों का शिकार करते हुए दिख सकते हैं। चलो आज़माते हैं कि तुम कितने चमगादड़ देख पाते हो!

- किसी खुली जगह में जाओ। तुम अपने घर की छत पर भी जा सकते हो। सूरज ढलने के थोड़ा पहले जब रोशनी हल्की होने लगे तब ऊपर आसमान की ओर देखो – क्या तुम्हें बड़े आकार के चमगादड़ दिखाई देते हैं? इनका आकार कौए से भी बड़ा हो सकता है। ये चमगादड़ अक्सर शाम होने पर अपने बसेरों से बाहर निकलते हैं और अलग-अलग दिशाओं में चले जाते हैं।

  10 मिनट में तुम्हें कितने चमगादड़ मिले उनकी गिनती करो। क्या तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो कि ज़्यादातर चमगादड़ किस दिशा में जा रहे हैं? (उत्तर से पूर्व या पूर्व से पश्चिम) इसका अन्दाज़ा तुम ढलते हुए सूरज की मदद से लगा सकते हो।

- अँधेरा होने से पहले जब तुम आसमान की तलाश कर चुके होगे उसके बाद तुम सड़कों पर लगी लाइट पर देखना। शायद तुम्हें वहाँ छोटे कीड़ों का शिकार कर रहे कुछ चमगादड़ दिख जाएँ।

- बगीचों में कुछ फलदार पेड़ों जैसे अंजीर वगैरह में भी चमगादड़ फल खाते हुए आसानी से मिल जाएँगे। अब यह नोट कर लेना कि कितने चमगादड़ तुम्हें कहाँ-कहाँ मिले और वह क्या कर रहे थे।

कुछ चमगादड़ अपना घोंसला खुद तैयार करते हैं। भारत में इस तरह की 3 किस्में मौजूद हैं। वह कभी-कभी खजूर या केले के पत्तों को चबा-चबाकर, उन्हें मोड़कर अपने लिए टेंट जैसा घोंसला तैयार कर लेते हैं। कभी केले के या खजूर के पत्तों पर इस तरह का घोंसला दिखाई दे तो उन्हें ध्यान से देखना। तुम्हारी किस्मत अच्छी रही तो शायद तुम्हें वहाँ पर एक-दो चमगादड़ भी दिखाई दे सकते हैं।

प्रतियोगिता

अपनी फील्ड डायरी के नोट्स हमें chakmak@eklavya.in पर ज़रूर भेजो। हमें बताओ कि तुमने कितने फ्लाइंग फॉक्स गिने और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

nature conservation foundation
science for conservation

अनुवाद: मुदित श्रीवास्तव

चित्र : जागृति कुम्भार, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: अलफाज फारूक काझी, चौथी, ज़िला परिषद प्राइमरी स्कूल,नाझरा, सोलापुर, महाराष्ट्र

दोस्त मिल गया

करन नायक
दस वर्ष, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान

एक बार की बात है। एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। उनमें से एक खरगोश था। एक दिन उसे दोस्त बनाने की सूझी। खरगोश ने सोचा, सब के दोस्त हैं, पर मेरा कोई दोस्त नहीं है। खरगोश अपने लिए दोस्त ढूँढ़ने चल देता है। उसे भालू का खयाल आया और वह सोचने लगा, "मैं एक भालू से ही दोस्ती कर लेता हूँ। पर वो इतना बड़ा और मैं इतना छोटा, जोड़ी नहीं जमेगी। मैं तो बराबर का दोस्त ढूँढूगा।"

एक दिन उसको अपना दोस्त मिल ही गया। वह था सियार। खरगोश ने सोचा, "इससे ही दोस्ती कर लूँ। यह दगाबाज़ी करने में बहुत समझदार है।" फिर सोचा, "इससे भी दोस्ती नहीं करूँगा। कहीं मेरे साथ ही दगाबाज़ी कर दी तो।"

वह घूमते-घूमते एक बाज़ार में गया। उसने एक दुकानदार को गुड़ और गाजर बेचते हुए देखा। उसने सोचा, "मैं इस दुकानदार को ही दोस्त बना लूँ।" फिर उसने सोचा, "यह तो मुझे ही मारकर खा जाएगा, मैं इससे भी दोस्ती नहीं करूँगा।"

उसने दुकानदार से भी दोस्ती नहीं की। फिर वह घूमता-घूमता शेर की गुफा के पास जा पहुँचा। खरगोश ने सोचा, "मैं इससे ही दोस्ती कर लेता हूँ।" फिर सोचा, "यह तो मुझे अपने बड़े-बड़े नाखून चुभा देगा। मैं इससे भी दोस्ती नहीं करूँगा।"

वह घूमता-फिरता एक माली के खेत में जा पहुँचा। उसने देखा माली गोभी तोड़ रहा है। उसने अपने मन में सोचा, "मैं इस माली से ही दोस्ती कर लूँ।" उसने फिर सोचा, "यह तो मेरे पीछे कुत्ते लगाकर मार देगा।" फिर वह वहाँ से चला गया।

एक चिड़िया अपने घोंसले में बैठी थी। उसने सोचा, "मैं इससे ही दोस्ती कर लेता हूँ।" फिर उसने सोचा, "यह तो मुझे चोंच मार-मारकर भगा देगी, मैं इससे भी दोस्ती नहीं करूँगा।"

वह घूमता-घूमता एक मास्टर के पास पहुँच गया। फिर उसने सोचा, "मैं इससे दोस्ती कर लूँ।" फिर उसके मन में विचार आया, "यह तो मुझे पढ़ाएगा और मुझे थप्पड़ मारेगा।"

वह घूमता-घामता दूसरे देश में जा पहुँचा तो वहाँ उसे एक तितली मिली। तितली उसे बहुत अच्छी लगी। उसने खूब सोचा और पाया कि उसे तितली से अच्छा दोस्त नहीं मिलेगा। खरगोश ने तितली से दोस्ती कर ली।

चित्र : अतुल, तीसरी, लक्ष्यम संस्था, दिल्ली

मेरा पन्ना

चित्र: क्रान्ति अडसूल, दूसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चिड़िया का पंख

ममता बैरवा
तेरह वर्ष, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान

एक चिड़िया थी। वह बहुत सुन्दर थी। लेकिन वह थोड़ी-सी मूर्ख थी। एक दिन वह झाड़ियों में बेर खा रही थी तो उसका एक पंख झाड़ी के काँटों में उलझ गया। चिड़िया ने बहुत कोशिश की लेकिन वह अपने पंख को काँटो में से नहीं निकाल पाई। जब भी वह अपने पंख को काँटे से निकालने की कोशिश करती तो उसके पंख से खून निकलने लगता। वह थक गई और रोने लगी। तभी एक ग्वाला उस झाड़ी के पास से निकला। उसने चिड़िया के रोने की आवाज़ सुनी तो वह चिड़िया के पास आ गया। उसने देखा कि चिड़िया के पंख से खून निकल रहा है। चिड़िया ने कहा कि, "मेरा पंख काँटों में फँस गया है। तुम इसे निकाल दो।" ग्वाले ने काँटे से उसके पंख को निकाल दिया। चिड़िया ने कहा, "तुमने मेरी मदद की है, मैं तुम्हारी बहुत आभारी रहूँगी।" फिर चिड़िया वहाँ से चल दी।

वह एक पेड़ पर बैठ गई। उसने पेड़ के नीचे देखा तो उसे सोने की मोहरें दिखाई दीं। सोने की मोहरें देखकर वह बहुत खुश हुई। उसके दिमाग में एक तरकीब सूझी। उसने सोचा अगर मैं यह सारी मोहरें उस ग्वाले को दे दूँ तो कितना अच्छा रहेगा। वह जंगल में उस ग्वाला को ढूँढ़ने लगी। उसे वह ग्वाला एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ दिखाई दिया। चिड़िया ने ग्वाले से कहा, "अगर तुम्हें पैसे वाला बनना है तो मेरे साथ आओ।" ग्वाले को समझ नहीं आया कि यह चिड़िया क्या कर रही है। इसके पास खज़ाना कहाँ से आ गया? चिड़िया ने फिर कहा, "तुमने मेरी जान बचाकर मेरी सहायता की है, इसलिए मैं तुम्हें तोहफा देना चाहती हूँ।" ग्वाला चिड़िया के साथ चल दिया।

चिड़िया उड़कर आगे निकल गई और ग्वाला उसके साथ जाने के बजाय अपने घर चला गया। उसने सोचा कि यह चिड़िया मुझे मूर्ख बना रही है। चिड़िया ने वहाँ जाकर देखा तो ग्वाला वहाँ नहीं आया था। फिर चिड़िया ने सोचा, "ग्वाले ने मुझे मूर्ख समझा होगा। चलो, कोई बात नहीं। शायद ग्वाले को धन की ज़रूरत नहीं थी।"

चित्र: सलोनी यादव, छठवीं, बाल भवन सोसाइटी, बड़ौदा, गुजरात

मेरा पन्ना

गहरी चोट

रुद्रप्रताप
पाँचवीं, प्राथमिक शाला
हरफतराई, छत्तीसगढ़

एक दिन राजू सब्ज़ी लेकर आ रहा था। तभी उसकी साइकिल बस के नीचे आ गई। तभी राजू ने छलाँग मारी। वह मरते-मरते बचा। लेकिन उसे चोट लग गई। तभी राजू को हॉस्पिटल ले जाया गया। राजू के हाथ में गहरी चोट लगी। 10-20 दिन बाद राजू घर आया। तब से वो घर में ही रहता है।

चित्र: सीमा हुसैन, बारहवीं, आर्मी पब्लिक स्कूल, हेमपुर, उत्तराखण्ड

आटे के गुलाबजामुन

रेवती जुनघरी
छठवीं, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक स्कूल गोवारी, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

चित्र: सुरगी के वी, चार वर्ष, बेंगलुरु, कर्नाटका

मेरी माँ मेरे भाई को बेहद प्यार करती है।

उसकी हर इच्छा पूरी करती है। उसे जो चाहिए वो करके देती है। इस वजह से वो कुछ ज़्यादा ही सर चढ़ गया है। मैं और मेरी बहन उसकी हर ज़िद को पूरी होते हुए देखते हैं। उसके साथ-साथ हम भी अपनी इच्छाएँ पूरी करवा लेते हैं। जब भी हमें कुछ खाने का मन होता है तो हम उसके कान भरते हैं। वो माँ-पिताजी के सामने ज़िद लेकर बैठ जाता है। उसे कुछ मिल जाए तो हमें भी हमारा हिस्सा मिल जाता है।

उस दिन पोला था। माँ बहुत थक चुकी थी। लेकिन मेरे भाई को गुलाबजामुन खाने की इच्छा हो गई। वो ज़िद करने लगा। अब तक हमें भी इच्छा हो गई थी।

माँ बहुत समझा रही थीं। पर भाई मान ही नहीं रहा था। रोए जा रहा था। चीख-चिल्ला रहा था। तो पिताजी ने कहा ये कि त्यौहार के दिन में घर में रोना-धोना ठीक नहीं है।

क्या करतीं माँ? उन्होंने एक उपाय ढूँढ़ा। वो रोटियाँ पका रही थी। उसने कटोरी भरकर शक्कर की चासनी बनाई। तेल में आटे के गोले बनाकर तलने के लिए छोड़ दिए। जैसे ही गरम तेल में आटे के गोले छोड़े वो फटफट की आवाज़ के साथ पूरे घर में उछलने लगे। माँ डर गईं। गैस बन्द कर रसोई से बाहर भागीं। हम भी डर गए। थोड़ी देर बाद जब आवाज़ शान्त हो गई हम रसोई में गए। देखा तो पूरी रसोई में गोले बिखरे पड़े थे।

हमने वो गोले जमा किए और चासनी में डाल दिए। और ये गुलाबजामुन जब हमारे भाई को खाने के लिए दिए तो उसने छि: कहकर मुँह से निकाल फेंके। जब उसे पता चला कि ये असली गुलाबजामुन नहीं हैं तो फिर से उसका चिल्लाना शुरू हो गया।

हम सबने गुलाबजामुन खाकर देखे। छि:... कौन खाए ऐसे गुलाबजामुन???

दूसरे दिन माँ ने असली वाले गुलाबजामुन बनाकर दिए।

चित्र: अनाम, द येलो ट्रेन स्कूल, कोयम्बटूर, तमिलनाडु

मेरा पन्ना

लॉकडाउन में हमारी नई दुकान

मुस्कान दूबे
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह
प्रथम बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे पापा एक स्कूल में बस ड्राइवर हैं। उन्हें वेतन चार हज़ार रुपए ही मिलता है। इसलिए मेरी मम्मी भी बहुत से काम करती हैं और पढ़ाती भी हैं। जब से कोरोना आया और लॉकडाउन लगा तब से स्कूल बन्द हैं। इसलिए पापा को वेतन नहीं मिल पा रहा है जबकि ड्यूटी पर रोज़ जाते हैं। इस वजह से मम्मी-पापा बड़े परेशान चल रहे थे कि तभी हमने निश्चय किया कि एक छोटी-सी दुकान खोली जाए। फिर सोचा कि क्या बेचें।

किराने की दुकान खोलने के लिए बहुत-सा पैसा चाहिए था। पापा उसे भर्ती कहते हैं। इसलिए हमने सब्ज़ी की दुकान खोलने का निश्चय किया। मैं और मेरी बहन ने पापा को साथ देने को कहा। पापा और मम्मी सब्ज़ी मण्डी गए और एक बोरा आलू, बीस किलो प्याज़, दस किलो लौकी, चार बड़े कद्दू, एक थैला बोड़ा, दस किलो टमाटर, परवल, कुंदरु आदि लाए।

हम किराए के घर में रहते हैं। बाहर वाला कमरा छोटा है। उसमें हम लोग सोते हैं। इसलिए घर के बाहर एक चौकी रख ली गई जिस पर पूजा करके सब सब्ज़ी सजा दी। अच्छी बिक्री हुई। पापा-मम्मी के मुँह पर खुशी दिख रही थी। कुछ सब्ज़ी खराब होने का डर था। इसलिए घर में जो पुराना फ्रिज था उसमें रख दी।

जब पापा दो बजे स्कूल से आते हैं तो खाना खाकर आराम करते हैं। तब तक बाहर धूप भी चली जाती है। और तब हम चौकी पर सब्ज़ी सजा देते हैं। मुझे भी अब तराजू से तौलना आ गया है और हिसाब भी जोड़ लेती हूँ।

चित्र: मुस्कान दूबे, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: सतीश गुप्ता, पहली, द हेरिटेज एक्सपीरियंसल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

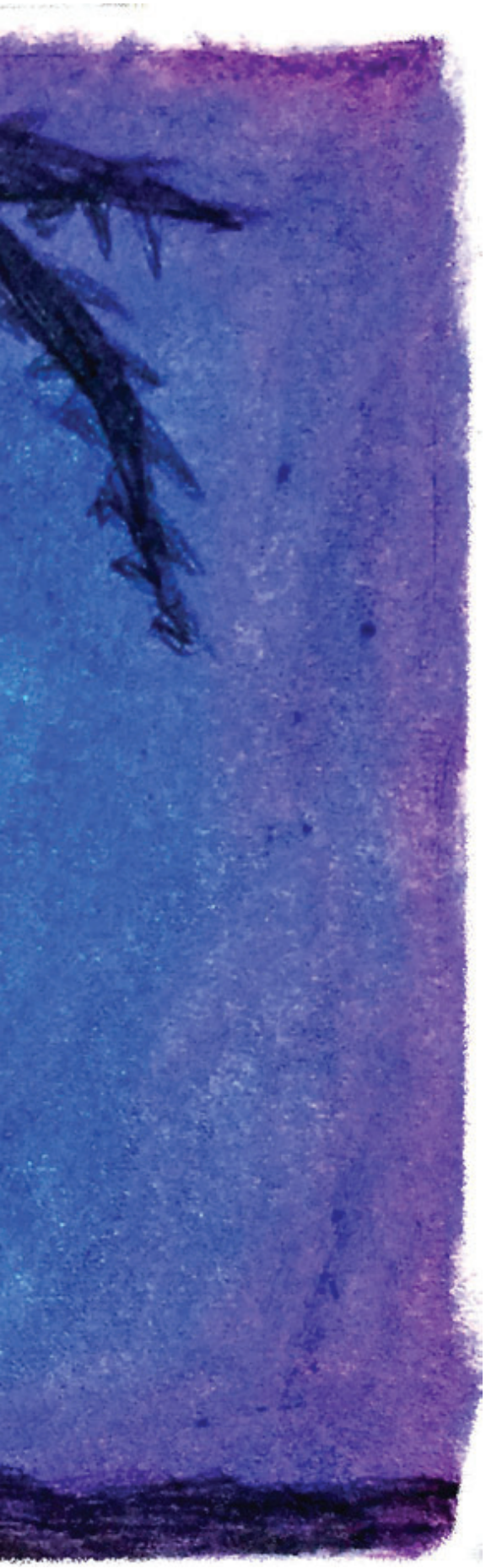

मेरा पन्ना

जब मैं सोता हूँ

नितीश कुमार
दसवीं, अपना घर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

जब रात में सोता हूँ
खुद को अकेला मैं पाता हूँ
न जाने सब कहाँ चले जाते हैं
मैं सिर्फ अकेला ही रह जाता हूँ
सपने में बहुत लोग आते हैं
पर वे सब पुतले होते हैं
उनसे बातें करने की इच्छा होती है
पर उनसे बातें ही नहीं हो पाती हैं
सपने को साकार होते हुए देखता हूँ,
पर उत्साह बढ़ाने के लिए कोई नहीं होता है
सपनों की दुनिया ही निराली होती है
छोटी पर बहुत अच्छी होती है

पालतू गाय

रितिका राजकोटी , पाँचवीं, भीमताल, उत्तराखण्ड

एक गाय थी। वह रोज़ जंगल जाया करती थी। वहाँ उसे हरी-हरी घास मिलती थी। जब वह घर आती उसे रस्सी से बाँध दिया जाता था। जब वह खुलती तो बहुत तेज़ दौड़ती थी और फिर से जंगल जाया करती थी।

एक दिन वह घर लौट रही थी। घर में कोई नहीं था। वह किसी दूसरे के खेत में घुस गई। वहाँ उसे नरम-नरम घास खाने को मिली। तभी वहाँ मालिक आ पहुँचा और उसने देखा गाय घास खा रही है। वह बहुत ज़ोर-ज़ोर से गाय को भगाने लगा। गाय को बहुत दुख हुआ।

माथापच्ची

1. वीरबहूटी का कौन-सा जोड़ा बीच में जाकर मिल पाएगा?

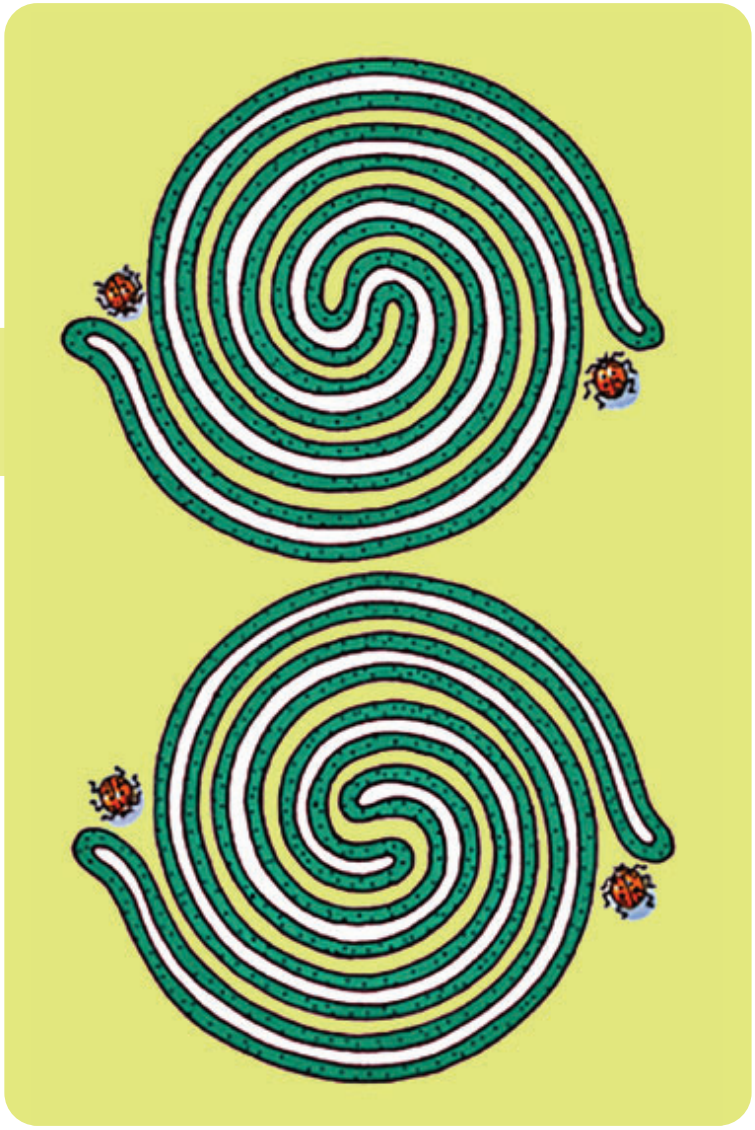

2. एक गाँव में केवल दो नाई हैं। दोनों की दुकानें दो अलग-अलग छोर पर हैं। एक नाई की दुकान में जगह-जगह बाल बिखरे हुए हैं। उसके अपने बाल भी अजीब-से कटे हुए हैं। जबकि दूसरे नाई की दुकान साफ-सुथरी है और उसके बाल भी अच्छे-से, सलीके से कटे हुए हैं। अयान उस गाँव में नया-नया है। समझ नहीं पा रहा है कि उसे दोनों में से किस से अपने बाल कटवाना चाहिए। तुम्हें क्या लगता है उसे किस नाई से अपने बाल कटवाना चाहिए?

3. नीचे दो-दो शब्दों के कुछ जोड़े दिए गए हैं। तुम्हें इनमें से हरेक जोड़े के लिए एक ऐसा शब्द लिखना है जिसका सम्बन्ध उन दोनों शब्दों से हो, जैसे कि किसान, सवाल → हल

पानी, संगीत → .....

फूल, खेल → .....

लकड़ी, समय → .....

भाषा, भोजन → .....

4. इनमें से अण्डे का टूटा हुआ हिस्सा कौन-सा है?

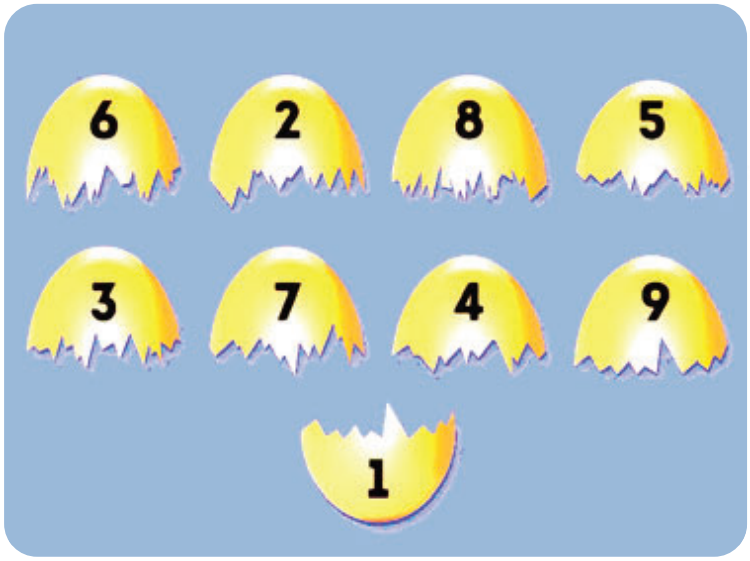

5.

माचिस की दो तीलियों को इधर-उधर करके तुम कौन-सी सबसे बड़ी संख्या बना सकते हो?

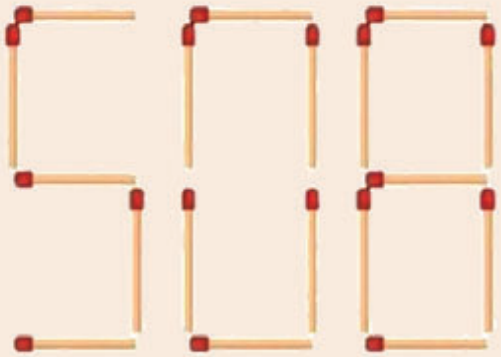

6.

किताबों के एक शेल्फ में एक किताब दाहिने से चौथे और बाएँ से छठवें नम्बर पर रखी है। बता सकते हो कि शेल्फ में कुल कितनी किताबें हैं?

7.

ऐनी कमरे में बैठी किताब पढ़ रही है। अचानक लाइट चली जाती है। पूरे कमरे में अँधेरा छा जाता है। कहीं से ज़रा-सी भी रोशनी नहीं आ रही होती। फिर भी ऐनी पढ़ना जारी रखती है। यह कैसे हो सकता है?

8.

मिस्टर व्हाइट, मिस्टर ब्लैक और मिस्टर ब्राउन एक समारोह में मिले। तभी मिस्टर व्हाइट ने कहा, “तुमने ध्यान दिया कि हम में से किसी ने भी अपने नाम के रंग की टाई नहीं पहनी है।” “हाँ, तुम बिलकुल सही कह रहे हो”, काली रंग के टाई पहने व्यक्ति ने कहा। क्या इस बातचीत के आधार पर तुम बता सकते हो कि किसने कौन-से रंग की टाई पहनी थी?

फटाफट बताओ

कौन-सा कागज़ है जिसे पढ़ने-लिखने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता?

(रेगमाल कागज़)

मैं भाग नहीं सकती फिर भी लोग मुझे बाँधते हैं। बताओ मैं कौन हूँ?

(घड़ी)

मिर्ची मुँह के अलावा और कहाँ लगती है?

([illegible])

वह क्या है जिसे देखा जा सकता है पर छुआ नहीं जा सकता?

(सपना)

वह क्या है जहाँ नदी है पर पानी नहीं, जंगल है पर पेड़ नहीं, सड़क है पर गाड़ियाँ नहीं?

(नक्शा)

समोसा खाया नहीं,
जूता पहना नहीं, क्यों?

(क्योंकि तला न था)

हरा घेरा, पीला मकान
उसमें रहते, काले निशान

(पपीता)

पगरी में भी, गगरी में भी और तुम्हारी नगरी में भी
कच्ची खाओ, पक्की खाओ, सिर पर उसका तेल लगाओ

([illegible])

काँटों से निकली, फूलों में उलझी
नाम बताओ, पहेली सुलझी

(तितली)

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर डब्बे में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

9				3	7		6	
2	7				9	1	8	4
6	5		2		4	7	3	9
		5	3		6	9	2	
						4	7	3
	9		8	4	2		1	5
5	4	2	7	6	3	8		
1	6	8		2			4	
7	3		4	1				

सुडोकू-36

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

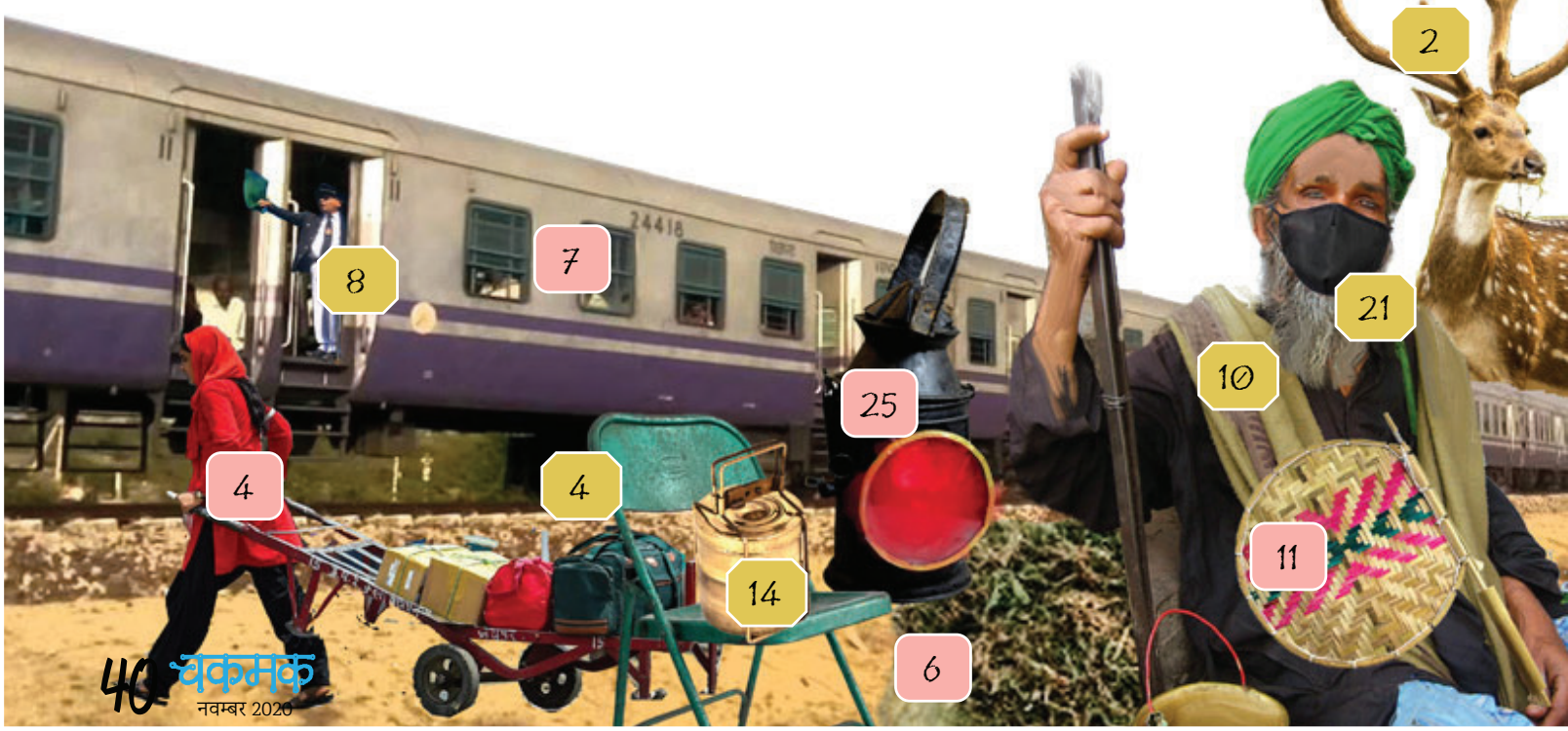

REKHA
FAROOQUE SHAIKH
NASEERUDDIN SHAH
RAJ BABBAR

माथापच्ची जवाब

1. ऊपर वाली कुण्डली (स्पाइरल) एक बन्द लूप से बनी है और उसमें दोनों वीरबहूटियाँ कभी भी नहीं मिल पाएँगी। नीचे वाली कुण्डली दो अलग-अलग लूपों से मिलकर बनी है और इसमें दोनों वीरबहूटियाँ बीच में जाकर मिल पाएँगी।

2. जगह-जगह बाल बिखरे होने से पता चलता है कि उसकी दुकान पर काफी लोग बाल कटवाने आते हैं। और चूँकि गाँव में दो ही नाई हैं तो ज़ाहिर है कि उसने अपने बाल दूसरे वाले नाई से कटवाए होंगे। इसलिए अयान को अपने बाल पहले वाले नाई से कटवाना चाहिए।

3. ताल, हार, साल, अरबी

5.

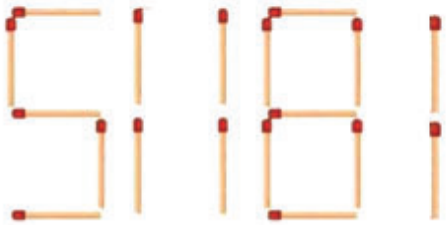

6. 9 किताबे हैं।

4.

7. क्योंकि ऐनी की किताब ब्रेल लिपि में थी।

8. चूँकि किसी ने भी अपने नाम के रंग की टाई नहीं पहनी थी तो ज़ाहिर है कि मिस्टर व्हाइट ने सफेद रंग की टाई नहीं पहनी थी। उन्होंने काले रंग की टाई भी नहीं पहनी थी क्योंकि काले रंग की टाई पहने व्यक्ति ने उनकी बात को सही बताया था। यानी कि उन्होंने भूरे रंग की टाई पहनी होगी। मिस्टर ब्राउन ने काले रंग की और मिस्टर ब्लैक ने सफेद रंग की टाई पहनी थी।

अक्टूबर की चित्रपहेली का जवाब

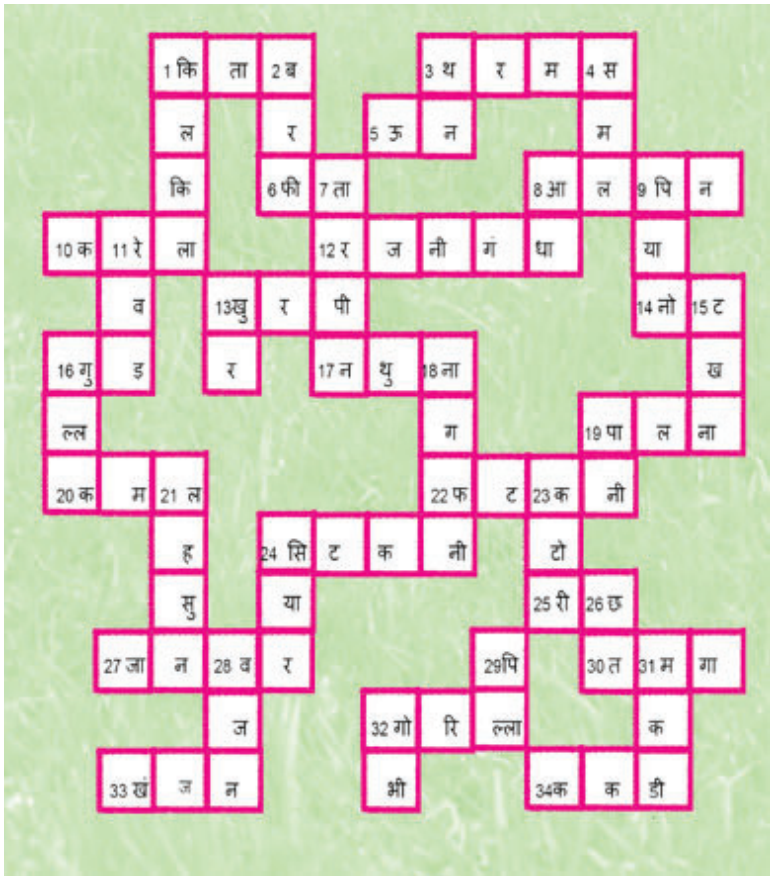

सुडोकू-35 का जवाब

3	4	9	2	7	6	5	1	8
1	6	8	4	9	5	3	7	2
7	2	5	1	3	8	4	9	6
8	5	6	9	4	7	2	3	1
4	3	1	6	8	2	7	5	9
9	7	2	3	5	1	6	8	4
5	1	4	8	6	3	9	2	7
6	8	3	7	2	9	1	4	5
2	9	7	5	1	4	8	6	3

मेरा पहला पहला CRUSH!

रोहन चक्रवर्ती

मिलिए मेरे पहले क्रश से। सोनाली बेन्द्रे जी। मेरे स्कूल के दिनों में वह सबसे मशहूर अभिनेत्रियों में से हुआ करती थीं।

एक दिन मेरे शहर नागपुर में उनके द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले गायकी के टीवी शो में भाग लेने के लिए एक प्रतियोगिता हुई। ये मौका मैं हाथ से कैसे जाने दे सकता था?! मैंने उन्हीं की फिल्म का गीत गाया और मुझे बम्बई जाकर उनके शो में भाग लेने का मौका मिला!

कई सालों बाद जब उन्हें कैंसर होने की खबर आई, तब कई लोगों की तरह मेरा भी दिल टूटा।

मैंने उन्हें इंस्टाग्राम द्वारा जल्दी ठीक होने का सन्देश भेजा। उन्होंने भले ही मेरा मैसेज न पढ़ा हो, पर वह कुछ महीनो में स्वस्थ हो गईं!

मेरे पिताजी जूतों का व्यापार करते हैं। उनके एक विज्ञापन पर सोनाली जी का चित्र था। उस चित्र को मैंने पोस्टर बनाकर अपने कमरे की दीवार पर चिपका दिया था। और उन्हें देखकर उनके गीत गाया करता था।

फिल्म *सरफरोश* में उन्हें बार-बार "Don't mind" कहने की आदत थी। उनसे मिलने पर मैंने भी उन्हें कह दिया...

आज भी जब वह अपने इंस्टाग्राम में नई तसवीरें डालती हैं तो मैं उन्हें देखकर उन्हीं के फिल्मों के गीत गा लेता हूँ।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

रंग भरी बूँद टपकने को है
कॉपी में पाखी फुदकने को है
आस्मां नील से सजने को है
पुलकी की आँखें छलकने को हैं।

लाल्टू की दो कविताएँ

चित्र: शिवांगी सिंह

आँका छोटा-सा बड़ा पहाड़
गिनती गिनी एक-दो-चार
भूरा रंग माथे पर मार
डाल दिया हल्का-सा भार।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म प्र से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फ़ोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन